

॥ श्री ॥

ढलती फिरती छाया नाटक

(मारवाडी बोलीमें)

बालविवाह नाटक, हर्षविवाह नाटक, एक मारवाडीकी बात,
एक मारवाडीको घटना, स्कूलमें मारवाडी सीठनोकी
बुराई, जसरापुरका वृत्तान्त आदि पुस्तकोंके
रचियता अग्रवशी वैश्य

जसरापुर निवासी

बाबू भगवतीप्रसादजी दारूका

लिखित

तथा

रामलाल नेमाणी

अध्यक्ष "रामप्रेस" द्वारा प्रकाशित ।



कलकत्ता न० ५६ काटन स्ट्रीट "रामप्रेस"में
शिवप्रसाद नेमाणी द्वारा मुद्रित ।

सन् १९१८

पहलीबार ।

मूल्य ॥५

साक्षी कात है !

सब दिन होत न एक समान ।

इक दिन राजा हरिचन्द्र गृह, संपति मेरु समान ।

इक दिन जाय खपच गृह सेवत, अम्बर हरत मथान ॥

सब दिन० ॥ १ ॥

इक दिन दुल्हा वनत बराती, चहु दिश उडत निशान ।

इक दिन डेरा होत जगलमें, कर सुधे पग तान ॥

सब दिन० ॥ २ ॥

इक दिन सीता रुदन करत है, महा विपिन उद्यान ।

इक दिन रामचन्द्र मिल, दोऊ विचरत पुण्य विमान ॥

सब दिन० ॥ ३ ॥

इक दिन राजा राज युधिष्ठिर, अनुचर श्रीभगवान ।

इक दिन द्रौपदी नग्न होत है, चीर दुशासनतान ॥

सब दिन० ॥ ४ ॥

प्रगटत है पूरबकी करनी तजमन सोच अजान ।

सूरदास गुण कहेंलग वरणै विधिके अक प्रमान ॥

सब दिन० ॥ ५ ॥

पैलं पोतकी बात ।

आजकल आपणे लोगमें कोई कोई धनवान आदमी निरधन आदमियाने भोत नीची निगाहसे देखण लाग गया है। उनके मनमें यो अभिमान हो गयो है कि, म्हे बडा आदमी छोटा आदमियासे बात करता के घोखा लागगा। म्हे अकलमन्द और ईमानदार हा। छोटा आदमी मूरख और वेईमान है।

या बी एका परमात्माकी माया है कि, आदमी जद भागवानसे कगाल हो ज्यावे है, जिकैई दिन मूरखता और वेईमानो ऊंका घरमें जलम ले लेवे है और जद आदमी कगालसे भागवान हो ज्यावे है तो मत्तैई ऊंने सगला जणा हुसियार और ईमानदार कहणै लग ज्यावे है। पण वै महात्मा बडा बाबु जिका गरीबी हालत आछेतरा भोग चुक्या है तथा आपका पेटमें आछेतरा जाण चुक्या है कि, आदमीको ठलती फिरती छाया है। जिका या बी आछेतरा जाणै है कि “दिननके फेरसे सुनेरु होत माटीको” “सब दिन होत एक समान।” जिकैई बहियाका बाबा, बडा बडा मसडाके रुहारे ऊंची २ गहियापर बेठकर, घमडका घोडा पर सवार हो, गरीब आदमियाने घृणाकी दृष्टीसे देखण लाग ज्यावे है। सेखीको चगमो चढाकर, कटाघका धाण फेकण

लाग ज्यावें है। कन्नै आधोडा गरीब आदमीने अपमानित तथा लज्जित करण लाग ज्यावें हैं। या कितणी अचरज और अन्यायकी बात है।

आजकल या बी बात भोत जगा देखी गई है कि, गरीब आदमी बडे आदमीके पास कोई कामके ताई चलयो जावे तो भागवान आदमी सगमें जाणे कि यो कंगाल मेरे पास क्यु आगयो। अके पास बैठणैसे आपणी आवरु हलकी होय है, सो आपणें कन्नै यो कोई सुरतसे नई आवे तो चोखो। जियासे इसी २ खुनस निकलणें लाग ज्यावे सो वो आपई उठकर चलयो जावें। आगाने ऊ के पास जाण जोगोई कोनी रवे।

देश दिशावरमें गरीब आदमी भगवान आदमी कन्नै कोई रुजगार भिवारके ताई चलयो जावे तो आसरो दीणं तो दूर रिह्यो, उल्टो कोई ना कोई आटो लगाकर जठेताई बस पूचै जंने गावमा से निकालणैकी चेष्टा करण लाग ज्यावें। या कितणी अनुचित बात है।

अपर या बात नई है कि, सगलाई भागवान इसाई है। ससारमें इसा २ धनवान, उदारचित्त, दयावान मिनख पद्या है कि, वै सबने एक निगाहसे देखें हैं। गरब गूमान जंणके लेस मात्र बी नई है। गरीब आदमियाकी सहायतामें रातदिन लग्या रवे है। परोपकारने आपको मुख्य धम्मा समजे है।

आज यो “ठलती फिरती छाया नाटक”

ऊई आदमियाने चेत कारणेके ताई बणायो गयो है जिका आख छोता आस्ता आन्दा हो रिह्या है। अँकी सगली बात मनसे जचाकर बर्त्तमान दशापर लिखी गई है। कोई के ऊपर खाश तौरसे नही लिखी गई है सो कोई आदमी आपके ऊपरको झूठो भैस मत करियो।

अँके पैना वृद्धविवाह नाटक, बालविवाह नाटक में मारवाडी बोलीमें बणायो था। ऊ नाटकाको चीखो आदर देखकर, यो नाटक बी मारवाडी बोलीमें बणायो गयो है। आशा है कि, ऊई माफक आप लोग अँको बी आदर कर कर मेरो उत्साह बढावोगा।

अँ नाटकने पढकर, धनका मदमें चुर हुयोडा, गरीबाने नीची निगाहसे देखणेवाला, आपको भूलने मज्जुर करता हुया, अँ भारी दोषने दूर करेगा तथा गरीबाने आच्छो निगाहसे देखेगा और उनको भलाईको ख्याल रखेगा तो में मेरा परिश्रमने सुफल समजुगो।

कलकत्ता

स० १८७६

सज्जनोंको दाम—

भगवतीप्रसाद दारूको ।

अँनाटक मांयला आदमियांका नाम ।

१ गोपीराम	परोपकारी बाणियु ।
२ लिक्कमी	गोपोरामकी लुगाई ।
३ सुरली	गोपीरामको बेटो ।
४ मोजीराम	मसखरो वामण ।
५ सेवाराम	साधारण सेठ ।
६ घोशाराम	हटवो बाणियु ।
७ जुहारमल	तामडेती पडित ।
८ भूरो	ऊँटवाल वामण ।
९ नैणसुख	साधारण बाणियु ।
१० रामली	बाणियाकी छोरो ।
११ शिवदत्तसिंह	घोडीको जमादार ।
१२ भेबली	करकसा बाणियाणौ ।
१३ भोलाराम	एक गद्दीको मालिक ।
१४ शिवकुमार	पूरवियो पण्डित ।
१५ मगतूराम	राडियो बाणियु ।
१६ रामप्रसाद	गोपीरामको रोकडियो ।
१७ रगलाल	कपडाको दुकानदार ।
१८ घमडीलाल	घमडी सेठ ।
१९ मोतीलाल	घमडीलालको सुनीम ।



श्रीभगवती प्रसाद दारुका ।

मालिक है ऊँको तो आसरोई है । पण वा कछ्वा करे है—
“मोर नाचै नाचै पण पगा कानो देखकर रो पडे ।” सो
जमा पूँजो बिना कैया काम चालसी ?

लिछमी—वा बी ठोका हो ज्यायगो ।

गोपीराम—तो बी, क्यु उपाय बी ?

लिछमी—उपाय तो या है, कि मेरे कन्ने गैणू है जिको
लेन्यो, ऊ से काम चलावो । दिन बावडैगो जणा और घणार्इ
गैणा हो ज्यायगा । नई हुगा तो के आट है । किसा गैणा
बिना मसारम मिनख कोनो रवै है के ? किसा सगनाकेई
गैणा है के ?

गोपीराम—(मनम) लुगाई बी होय तो ईसोई होय ।
लुगाई के है—“यथा नामा तथा गुणा है” और एक लम्बर
झिम्मतवाली वीरवानी है । आज कालकी लुगाया आपके
मुसे तो गैणू दीणको क्याके ताई के देवे, अगर सुसीबतके
बखत् मर्द मोथार गैणू माग बेटे तो, नो नाडी बहत्तर
कोटीकी जी नौसर जाया करे है । पण धन्य है एकी
छातीने तगीके बखत् गैणू दीणने त्यार होगई । तुलसीदासजो
बोतो साची कहो है—

“धोरज धम्म मिळ अरु नारो, आपत्ति काल परखिये चारो ।”

लुगाईकी परीक्षा आपत्तकालमें आपइ हो ज्यावे है
(उपरसे) तु कवै जिकी तो साची है पण ऐ गैणासे कितनाक
दिन काम चालसो ? ।

दीव धो, अंयाई छप्पर पर घूमे यी पण उणाके मरणे
नापई सोखु उलट पलट होगई। आच्छो, व
'बातना, ढलती फिरती छाया है। फेरुं बी कदे चीखी दि
आज्यावगी ।

(इतणामें लिछमी आवे है)

लिछमी—आज ये कैया गुम हो रिछा हो ? के फिकर
पड रिछा हो ?

गोपीराम—(निमलीसी जोबसे) नई कुईना ।

लिछमी—या बात तो क्य कयो । क्युं ना क्यु सोच त
जरई है । साचो बतावो ?

गोपीराम—काकोजो मरणैको आज कुछ ख्याल आगयो
जणा चितपर उदासी छा गई, जिक्कासे चिन्त्या मानूर
देती होगी ।

लिछमी—अया ख्याल कय्या, चित्तपर विचार ख्याय
कैया पार पडसो । मा बाप सदई थोडाई बैठ्या, रिछ
करे है ।

गोपीराम—या ता ठीक है । पण ऊणके मरणेसे घरक
बीज वो तो सगलो मेरे ऊपर गिर गयो ।

लिछमी—यारे सिर पर बीज गिर गयो तो के आट है
वो पूर्णब्रम्ह कीडीने कण हाथीने मण देवे है जिको आपई
भरण पोसण करसो ।

गोपीराम—वो जगतको पालन करता तो सबको

मालिक है ऊ की तो आसरोई है । पण वा कछा करे है—
“मीर नाचै नाचै पण पगा कानो देखकर से पड़े ।” सो
अमा पूंजो बिना केंया काम चालसी ?

लिहमी—वा बी ठोका हो ज्यायगी ।

गोपीराम—तो बी, क्यु उपाय बी ?

लिहमी—उपाय तो या है, कि मेरे कचे गैणूँ है जिको
लेख्यो, ऊ से काम चलावो । दिन बावडै गो जणा और घणाई
गैणा हो ज्यायगा । नई हुगा तो के आट है । किसा गैणा
बिना ससारमें मिनख कोनो रवे है के ? किसा सगलाकेई
गैणा है के ?

गोपीराम—(मनमें) लुगाई बी होय तो इसोई होय ।
लुगाई के है—“यथा नामा तथा गुणा है” और एक लखर
हिम्मतवाली बीरबानी है । आज कालकी लुगाया आपके
मुसे तो गैणू दीणको क्याके ताई के देवे, अगर मुसीबतके
बखत् मर्द मोखार गैणूँ माग वेठे तो, नो नाडी बहतर
कोटीको जी नौसर जाया करे है । पण धन्य है एकी
छातीने तगीके बखत् गैणूँ दीणने त्थार होगई । तुलसीदासजो
बीतो साची कह्यो है—

“धोरज धर्म मित्र अरु नारो, आपत्ति काल परखिये चारो ।”

लुगाईकी परीचा आपत्तकालमें आपई हो ब्यावे है
(उपरसे) तु कवै जिकी तो साची है पण ए गैणासे कितनाक
दिन काम चालमो ?

लिहमी—जितना दिन चाले जितना दिन तो चलावो पीछे और कोई रस्ते बैठ ज्यासो । दाल रोटी तो भगवान देईसो ।

(इतनामें मुरली रोवतो २ आवे है)

गोपीराम—(मुरलीने) क्यूँ बैठा । कैसा रोवे है ?

मुरली—(जोरसे रोकर) एक छोरी थप्पड़की मारकर भाग गयो ।

गोपीराम—कुणसो छोरो यो ?

मुरली—भोलियो दरजियाको ।

गोपीराम—आजकाल मेरा भटा दरजीडाको भौत सिर सूज गयो ।

लिहमी—रामका माया गोला है ।

गोपीराम—गोलाकी तो ये बातई है । साची बात है—“गोलो और मुज पराये बल आवस्था करे है” एक बड़े आदमीको थोडोसो सहारो हो गयो है, जिससे ये बंदी के घोड़े सवार हो रिह्या है ।

लिहमी—या बी दिनकी बात है । अंया छोराके माया करे है के ? कुजगा लाग ज्याय जणा के मण बीगोकी कटे ?

मुरली—(सुबकतो २) मेरेकानौ लात बी बारं थी पण मै सरक गयो, नई तो और बी जोरकी लागती ।

गोपीराम—ऊ कै के आट थी । ऊ कै भावे कठेई लागो । (मुरलीने पुचकार कर) ना, बैठा । रोवे मतना । आपणू

दिन इसोई है । अंया मतना करे आपा बी ऊने मारागा ।
मिलण दे देख किसीक करा (मनमें) शूद्रकी जात मार खाया
बिना ठीक रस्तेपर कोनी आवै । मधाराज तुलसीदासजी
साची कह्यो है—

“ढोल गवार शुद्ध पशु नारो, ये सब ताडनके अधिकारी ।”
सी कदेना कदे गोलाका सिरमें ठोलो लाग ज्यावेगो जणा
आपई मान ज्यावेगो ।

लिछमी—(मुरलोने पुचकारकर) आव, आसू पूछले ।
देख तने खिलारा दुगो । गांवमें मना जायाकर । घरमें
खेलवो कखाकर । बेटा, धूम मना कखाकर ।

मुरली—मैं के धूम करे हो । मैं तो मेरे गेले आवेथो,
जिको वो जोरामरदो मेरे चनपट लगाकर भाग गयो ।

लिछमी—भाग ज्याणदे । तेरा काकोजीने मिलेगो जणा
ऊने ये खूब मारेगा । बैठज्या, रामका सुवाद्या कलेवो
करले ।

(मुरली कलेवो करण लाग ज्यावे है)

गोपीराम—आच्छो तो मैं बावडीमें स्नान कयाऊं हुं ।
इतणे रसोई त्थार करले ।

मुरली—काकोजी ! मैं बी बावडोमें न्हावण
चालुगो ।

गोपीराम—सुसरा गधा ! कलेवो तो करले । काल न्हावण
जाया जणा तूबी चरयो चालिये ।

मुरली—(कलेवो छोडकर) या ल्यो । मैं तो न्हाया बिना कोनी खाऊ ।

गोपीराम—बाबला बेटा । अ या कखाकरे है के ? कलेवो करले । नाराका मुडा कुण धोया है ।

लिछमी—इध थे वधु खड्या हो ? जावो न्हायावो क्यु ना । यो तो अ यार्ड करवो करसी । (मुरलीने) बेगो बेगो जौमले तन्ने तमाशा दिखावागा ।

(मुरली फेरु कलेवो करण नाग ज्यावे है और गोपीराम बागडीमें नावण चल्थो जावे है)

❀ प्रवेश दूसरो ❀

ठिकाणो सहरके किनारेकी बागडी ।

(गोपीराम आवे है)

गोपीराम—(भोजीरामने) भोजीरामजी महाराज डडोत !

भोजीराम—(मुलककर) सुखी रहो सेठा ।

गोपीराम—के हो रिह्यो है ?

भोजीराम—देख्यो । रामजो आख तो बडी २ दर्द है ।

गोपीराम—देख्यार्ड पछा हो । वा कह्या करै है—“घर जायिका दात गिनियेक दिन ।”

भोजीराम—ओहो । जणा तो आप पूरा जाणहार हो ।

गोपीराम—महाराज । धारसैं तो कमतीई हा ।

मोजीराम—कमतौ कया हो ? पूरा हो ।

गोपोराम—पूरा महात्मा तो थे बिरामण लोगई हो ।

मोजीराम—आजकाल हम्मास्त्रिया बामणाने कुण बूजै है । म्हारो बूज तो उठ गई । आजकाल तो बाणियाई सगलीतरा महात्मा हो रिछा है ।

गोपीराम—हरो मतना । बामणाके मित्राणी जोशती रवो, पीछे तो बामणाका आपई पोबारा है ।

मोजीराम—जणाई तो बाणियानें महात्मा बतावा हा । कुबदकी जड तो थेई लोग हो । म्हारे तो यो भूठो कलक है (कक्कर) और बात तो जाण्यो । हासी उठा तो युई होबो करेगा । बोलो । आज उदास कया हो ?

गोपोराम—ये किसा कोनी जाणू ।

मोजीराम—ए बातको के फिकर है । सुस्त मतना रिछा करो । खुब हुंसियार रिछा करो । माबाप तो सबका मरता आया है । हिम्मत राख्या करो । वा कहोबो है—“हिम्मत मरदा मदत खुदा, बादस्याकी बेटी फकीरकी निकाह ।”

गोपोराम—(सुनक्कर) महाराज । बामण हो जणा बोली आवे है ।

मोजीराम—बाणियाकी जोबपर देई माई बैठी रवें है के ?

गोपोराम—आज कैया भचक बचक हो रिछा हो ? मित्राणीजी घरसैं निकाल दिया के ?

मोजीराम—निकात्याई पद्या हा । अठे तो अयाई “सदा दिवालो साधके, आठपहर आनन्द ।”

गोपीराम—आज भाग बुंटेकी मिसल कोनी बैठी दीखे ?

मोजीराम—या कहो ! भाई, बाणियाबो जबरन होय हैं । मनकी भूट जाण ज्यावे है ।

गोपीराम—कह्याबो तो करे है—“अगम बुद्धी बाणियु, पच्छिम बुद्धो जाट । तुरत बुद्धी तुरकडो, बामण सपट पाट ॥”

मोजीराम—खैर ! बामण तो संपट पाटई सही । पण भाग बुंटेकी ताई खाली पूछई लईक क्युछोख डालबी बैठसी ?

गोपीराम—यातो ये जाणुंई हो कि आजकाल घरमें चाको न्यौरता कर रहो है । पीछे रहे के मिसल बठावा ?

मोजीराम—यो थारो कैण भूल है । समदर सुसै तोबी गोडा सुबो पाणी जरूर लहादे । न्हारो तो एक चवन्नीमें काम बण ज्यायगो ।

गोपीराम—थेबो वाई करी—“आन्दा स्वामी राम राम, तेरेई न्युतो ।” पण खैर (चवन्नी हातमें लेकर) ल्यो, थारो मतबलतो बुणगी न्हारी तो देखी जासो ।

मोजीराम—(चवन्नी लेकर) सुखी रहो ! (मनमें) आज तो भाई मोजीराम—मोज हो गई । (ऊपरसे) हे, शिम्भू कैलासपति ! गोपीरामजीने बेगोसो लखपती कर ज्यु रातदिन दूदिया छणबी करै । दुश्मनकी छातीपर गैरो रगडो लागबी करै ।

(इतनाम सेवाराम आवे)

सेवाराम—(गोपीरामने देखकर मनमें) आज यो गोपियो कठे मिल गयो । रस्ते गेलेमें मिलतो जणा तो मुडो फेरकर दूसरी कानो चल्या जाता पण अठे क्यामें बडा, अठे लुक्कण-नेबो जगा कोनी । बावडीको काम ठैखो । इव तो मुकाब-लाई होसी । इव यो छ्यारमी जरूर क्यूना क्यू मागसौ । नट-प्या तो बुरा लाग्यां नई नटा तो दीणने कव्यासू आवे । भोतई सुक्कल मडी (रुककर) चालो के आट है देखी जासी टाला लीय का घणाई रस्ता है । नटणैकी शिक्षा तो बडकासे घणीई मिली है । ऐंका रस्ता तो घणाई याद है (गोपो-रामने) आज ज्ञान करणने आयो के ?

गोपोराम—इम्येजो, जयगोपालजोकी ।

सेवाराम—जयगोपाल ।

गोपोराम—(छोडो उदास होकर) के बताया । काकीजी को थारो तो घणुइ मेन थो ।

सेवाराम—(लापरवाइसे) इव मेल के काम आवे । भागलाको सुरगवास हो गयो । इव उनसे के सीर रिह्यो ।

गोपीराम—(मनमें) यो तो काकीजी को भोत भारी जिगरी भायेली थो । दीन, एक दातकी टुटी रोटी खाय था सो अ को परिचा तो लेणी चाये देखा कबु ततथो हैक, खाम्नी टफोल सखीई भायेली थी (ऊपरसे) थाने इज न्हारी मदत करणी चाये । अँ बगलु योडी रुहारो दीणी चाबे ।

सेवाराम—लाला ! मैं तन, मनसें थारी मदत करणने
 , त्यार हू ।

गोपीराम—तन मनसें मदत करणिया तो और घणाई
 मिल जावेगा । धाने तो और बखत कुछ रुपयाकी मदत
 करणो चाये । मदाई इसा दिन कोनी रवेगा । कदे म्हेबो
 आदमी हो ज्यावागा ।

सेवाराम—लाला ! तु कही जिकी तो ठोक, पण आज
 काल रकम सगलो रजगारमें फँसो पड़ी है । और छाराबो
 आप आपकी मते हो रिछा हैं सो रुपया पोसाकी तो मैं
 यहुई कोनी कहणै सकुं । मेरा शरीरसें तो मैं त्यार हू ।

गोपीराम—(मनमें) तेरा शरीरको की करा । बुझामें द्याक,
 चोरावै लेज्याकर- गाडा (ऊपरसें) खेर । ये धारा अगसें
 मदत करणने त्यार हो, याई भोत है ।

(सेवाराम गहाकर चप्यो जावे है)

गोपीराम—(मीजीरामने) रुनान कर लिया तो चालो
 चालां ।

मीजीराम—चालो सेठ साव ।

गोपीराम—बाबाजो, ग्हे क्याका सेठ हा ।

मीजीराम—देखो ग्हारा मू से निकलीई है । इस घणाई
 जलदो ये सेठ होज्यावोगा ।

गोपीराम—चोखी बात है । चालो ।

(दोनू जावे हैं)

३ प्रवेश तीसरो :

ठिकाणी घीशारामकी दुकान ।

(गोपीराम मोजौराम आवे हैं)

मोजीराम—(गोपीरामने) देखा, जमानाकी बात । धारा काकीजी भै सेवारामको कितणी २ मदत करी थी । यो, बात उ'यके भरताई भूल गयो । ससारमें कोईबी किसीको नई है । माची कछा करे है—

“मतलबकी मनुहार, जगत जिमावे चुरमू ।

बिन मतलब ससार, राव न घाले राजिया ॥”

भै मुसलचदने जगबी नटता बाज कोनी थाइ । भट नटकर नाके होगयो, फोरबग जबाब देदियो ।

गोपीराम—महारी लिङ्गाज क्याकी आवे थो । म्हे दिसा बरावरिया धा जिकी धातने म्हारसे काम पड़े गो तो बदलाको जबाब मिल जायगो ।

मोजीराम—सेठ ! या तो ढनती फिरती छाया है । भै बातकी किसी कोईके अमरपटो छी गयो है । आज ताई लिछमी कोई के पीछो घालकर नही बैठी है । या तो डोलती फिरती २ रवे है ।

गोपीराम—महाराज । लिछमी हुआ पीछे या बात दौलत से रह जावे है । ऊपरने थाचरो हो जावे है ।

मोजीराम—उसो यो लिहमीवानवी तो कोनो !
कठे दस बोध हजारकी पूजा होगी । पण वा कट्टा करे
है—“जत गावमें कुम्हारई मरतो” “जे गावमें रंगु कोनो
जिकामें अरंडई रख ।”

गोपीराम—अठे तो योई टीकली कमेडी हो रिह्यो है ।
अर्को मारोई तेहंपताल जाय है ।

मोजीराम—जणा के, चणू ऊछलकर भाडन फोड गेरे ।

गोपीराम—म्हाराज ! भागयानाकी दूर बलाय है ।

मोजीराम—बसी के, जणा म्हे युई देई देवता मनावा
हा थि, ये वेगासा लखपती हो । येवो धनवान हुआ पोछे
येई धन्दा करोगा के ?

गोपीराम—“काला काला सेई बापका साला ।” सगलाई
आदमियांनि इकसार समझ लिया के ? म्हाराज !
ये ओछा आदमियाका काम है कि, लिहमी पाकर
गुमानमें टेडा हो ज्वावे है, गरीबाने नोचो निगासें
देखण लाग ज्वावे है । ओछा आदमियाका ये काम
नई है ।

मोजीराम—या बात चाये तो नई । क्यु कि भुग मोठमें
कण छोटी बडो है । आदमीने ईश्वरके नीचे बसकर गरव
गुमान कदेबी नई करण चाये । हर बखत हृदयमें दया
रखणी चाये । दयासें धर्मकी वृद्धि होय है, अभिमानसे
पापकी, वृद्धि होय है । म्हाराज तुलसीदासजीवी तो

वाही है—

“दया धर्मकी मूल है, पाप मूल अभिमान ।
तुलसी दया न छोड़िये, जबलग घटमें प्राण ॥”

गोपीराम—दया कठेसे होय । भगवानका भजनमें हृदयमें ज्ञान होय जणा होयना । जिज्ञा तो लीग रात दिन पापमें लीन हुया जावे है । भगवानका भजनकी उसटो हासी उडावे है ।

मोजीराम—या के आखी बात है । घणा खोटा भुगातसी । कछा करे है—

“हर भजता हासी करे, जाके पेटे पाप ।
पेट पलाय्या चालसी, जगल होसो साप ॥”

(श्री माफक दोनु जणा बात करता २ घीशारामजी दुका नके वारला चुतरापर आकर बैठ ज्यावे है)

* घीशाराम—(मनमें) यो गोपियो थठे क्यु आगयो ? यो बामणडोयी मझा मूरख है । वा कछा करें हैं—‘मार्नि ना तानि में लाडाकी भुवा ।’ भट् दोनु जणा हीठामह दुकानपर आकर बैठ गया । आदमी हाथ पकड कर उठा देवे तो बुरो लागै । हा । एका बात समझमें आगई । भोतरने नाजको धुल भोत पडो है सो भारी निकालणो चाये, जिको अणमें गरदो पडेगो, जणा आपई जठ ज्यायगा (भारी

मोतीराम—(हसकर धीशारामने) बस । बस ॥ आज तो भोत उडायो

गोपीराम—आज तो छाण्यो छुण्योई उडा दियो ।

मोतीराम—(गोपीरामने) देखो के हो, बाणियांवालो भारी हो गई है । बाणियांको जोर दुकानपरई चाल्या करे है । कहीवीतो है—

“जाट न जंगल छड़िये, हाथ्या वोच किराड ।

रागड कटे न छेड़िये, तुरत काट दे नाड ॥”

गोपीराम—चालो इब तो ऊठणुई पडसी ।

धीशाराम—(उपरला मनसे) नई नई । बैठो । बैठो ॥ (मनमें) मेरा मटा जाण तो गया । जाणों भलाई आपा तो या चावाई हा ।

गोपीराम—(मनमें) ऐसेवी काकोजी भोत दीण लीणको विचार राख्या करता । यो काकोजीसें पांच चार सो रुपया पैना लियाया करतो, पाछे धीरा २ चोज बस्त भेजकर पूरा कथा करतो, सो एको बात बीसो जरूर पजो-खणी चाये (उपरसें) धीशारामजी । आज तो घरा गिर्ज कोनी सो पच्चीस रुपयांका गिर्ज दूबी भेज थो (गिवा कानो आगली करकर) ये थारि गिर्ज पच्चा जिका भोत चोखा है सो येई भेजयो ।

धीशाराम—(मनमें) बस, या तो पैलाई दीखै यी कि बैठ्याका नामको क्युना क्यु जरूर लपचेड लागसो । देखता

परात माघो ठिणक गयो थो, सी बाकी बा झुई । पण एक नम्रु मो दु ख हडे है । इवतो चतराईसें बिलकुल नट ज्यागुई ठाक । (ऊपरसे) गिक तो पू च ज्यासी, पण थे घरा जाताई रुपया इवी भजयो । हुन्डी लई है ए का रुपया ममै ईवो दीया पडंगा ।

मोजीराम—(गोपीरामने सुणाकर घिरासी) रुपया होता तो तु इ थो के । चुतिया मर गया ओलाद छोड गया । हनदकी गाठ लेकर मुंसो पसारीई होगयो । देख्यो ऐंको डोल । सुंलिया जाणु चालणीसो ।

गोपीराम—(घीशारामने) गिवाकी भाव के है ?

घीशाराम—भावतो दम सेरको है ।

गोपीराम—देखा, घरा जाऊ ह । चायेगा तो रुपया भेजकर मगा लेऊ गो ।

घीशाराम—(सापरवाईसे) तेरो खुशो ।

मोजीराम—(गोपीरामने) ल्यो । चाना ।

गोपीराम—(ऊठकर) चालो महाराज ।

(दीनु जाये है)



मोजीराम—(हमकर घीशारामने) बस । वर ॥ आज तो भोत उडायी

गोपीराम—आज तो काण्णों छुण्णों उडा दियो ।

मोजीराम—(गोपीरामने) देखो के हो, बाणियावागो भारी हो गई है । बाणियाको जोर दुकानपरई चाल्या करे है । कहीवीतो है—

“जाट न जंगल छडिये, हाव्या बोच किराड ।

रागड कदे न छेडिये, तुरत काट दे नाड ॥”

गोपीराम—चालो इव तो ऊठणुई पडसी ।

घीशाराम—(उपरना मनसे) नई नई । बैठो । बैठो ॥ (मनमें) मेरा भटा जाण तो गया । जाणों भलाई आपा तो या चावाई हा ।

गोपीराम—(मनमें) एंसेवी काकोजी भोत दीण नीणको विचार राख्या करता । यो काकोजीसें पांच थार सो रुपया पैला लियाया करतो, पाछे धीरा २ चोज वस्त भेजकर पूरा कया करतो, सो एको बात बीतो जवर पजो-खणी चाये (उपरसें) घीशारामजो । आज तो घरा गिऊ कोनी सो पच्चीस रुपयाका गिऊ इबी भेज यो (गिया कानो आगली करकर) ये थारे गिऊ पछा जिका भोत चोखा है सो येई भेजयो ।

घीशाराम—(मनमें) बस, या तो पैलाई दीये थो कि बैठ्याका नामको क्युना क्यु जरुर लपचेड लागसे । देखता

मोजीराम—थारोई जोमा हा । म्हेतो आज या वातई देखे या ।

निछमो—वस के, जणातो वेरो पद्यो ।

मोजीराम—जद म्हे अया जीमण लाग व्यावागा तो ओजु धे जीमणैको नामई कोनी लेवोगा । धम्ममूर्त । यो तो चलटा हाथाई धो घल्या करे है ।

(इतणामि मुरली खेनतो २ आवे है)

मुरली—(मोजीरामने देखकर) आ—हा—रे । अगड धत बाबो आयोरे । बाबा । रादाकिशन २ बोल ।

मोजीराम—धत्तेरो नानौको नाक काटु । बोल, श्रीहरी श्रीहरी । सीताराम, सीताराम बोल ।

मुरली—(नाड हलाकर) बाबा । रादाकिशन । रादा-किशन ॥ बोल ।

मोजीराम—कोनी मानेके । मार खायगो के ?

मुरली—(हाथका इसाराधे) बाबा । यो देख तेरी पगडी छुपट्टामें रादाकिशन बँध्यो है ।

मोजीराम—(पगडी छुपट्टो फीककर) या बाने, देखा इव वो कठे बैठेगो । बाबला बेटा । चोरको नाम नई लिया करे है ।

मुरली—वो चोर कंथा है । त' चोर होगो ।

मोजीराम—तेरो नानु चोर है । मैं क्यु चोर ह ।

● प्रवेश चौथो ●

ठिकाणो गोपीरामको घर ।

(गोपीराम मोजीराम आवें हैं)

लिछमी—(गोपीरामने) दायायाके ?

गोपीराम—हस्वै ।

लिछमी—आवो, रसोई त्थार है, जोमल्यो ।

मोजीराम—सेठाणोजौ । रुहेवी न्हा आया छ ।

लिछमी—महाराज । चोखी काम कख्यो ? विरामणको करम है ।

मोजीराम—नाने कोनी जिमावो के ?

गोपीराम—(मुलककर) साची बात है—“वामणने बतलायो, नखा लाग्यो आया ।” आगली पकड तो पूचोई पकडणने लाग गयो ।

लिछमी—(मोजीरामने) थारो तो सगलो परतापई है ।

मोजीराम—थेवी वार्इ करो हो—“भू तेरोई सो क्यु है, पण कोठ्यार कोठलीकै हाथ मत लगाये ।”

गोपीराम—(हसकर) देखो, “आई थो आगीने घरकी धिरियाणोई हो बैठो ।”

लिछमी—(मोजीरामने) ये तो, थारमें हासी करें है । आवो नौमो क्युना ।

गोपीराम—इब तो तेरे समझमें आवे तो मेरे एक बात भोत ठीक जचै है ।

लिछमी—(आग्रहसे) कणसी ? बतावो ?

गोपीराम—देख, अया बैया २ खाया तो कोठार कोठलो निमड ज्वाया करे है, सो मेरेतो परदेश जावार कुमाणेकी समझमें आवे है । तेरे के जचे है ?

लिछमी—(सास लेकर) ये या बात थारा मुडासे मतना कवो । अयाकी बात केणैसे मेरो कानलो जगा छौडै है । मन्ने धारि सिवाय के दीजे है । मेरेसे तो थारो यो बिछोवो कोनी सह्यो जावे ।

गोपीराम—बावली । अया कखा कैया काम चालसी । देख, सगलाई मर्द मोठार कुमावणने दिसावर जावे है । मैई किसो नयो जाऊहु । औराके लुगाई कोनी है के ? उणांकै दुख कोनी होय । तेरेई इसो ज्यादा दुख कैया होय है ?

लिछमी—उण लुगायाने पुछ्या बेरो होय ना । वे मरै सो है नई पण उणमे बाकी कबुबो रवे नई । मोठार जोराम रदी लुगायाने बिलखती छोड कर चल्या ज्वावे, जणा बिचारो के जोर करै ।

गोपीराम—बात तो तु कवे जिकी बी साचो है । पण ई देशमें तो कोई रकमको रुजगार भिवार है नई । अठे रुजगार धोखो होतो तो परदेश जाणकी के जरूरत थी ।

मुरली—(लिहमोने) देख ये मा । नानुजीने चोर बतावे है ।

लिहमी—बेटा । खिन्या नई करे है । बाबो है, अयाई कहबो करे है । आन्या जीम ले ।

मुरली—में तो काकोजीके सागे जीभुगो । पैला कोनो जीमु ।

मोजीराम—(गोपीरामने) सेठा ! ईब तो म्हाने ईजा-जत थो, जावा हा ।

गोपीराम—जावोगा ? आच्छो फेरु मिलियो । कदे २ म्हारे कने बौ आज्याया करो ।

मोजीराम—जरुर । जरुर ॥ थारे कने नई आवागातो कैके कने आवागा । थारी तो मालाई फेरा हा ।

(मोजीराम जावे है .)

गोपीराम—(जोमकर) मुरलीकी मा । आज तो काकोजी का भायेलाने और बजारका बाणियांने आछोतरा जांच लिया है । सगला जणा नट कर नाके हो गया है ।

लिहमो—नखोडाई पछा है सगलो ससार, सुखकी सीरो है ।

गोपीराम—साची बात है—बिन मतलब कोई चिरी आगलीपरई कोनी मुते ।

लिहमी—अैकीने कैणु ! या बात तो चोडैई पडो है ।

जुहारमल—ये या बात तो भोत सोवणी विचारी है ।
 वेश्यको कर्त्तव्य है व्यापार करण । “व्यापारे वर्द्धते लक्ष्मी”
 परदेश जावो खुब व्यापार करो । व्यापारही से लक्ष्मीको
 वृद्धि होय है । म्हारी तो थारी बढतोमेंई सोर है । भगवान
 याने बुणाया राखो । ये वेगासा लखपती किरोडपती हो ।
 हे तो रात दिन आप लोगांकीई माला फेरा हा ।

गोपीराम—देखो, आप लोगाकी कृपा होगी तो दिन
 घावडता के, देर लागे है । पण म्हारे तो मुरलियाकी मा
 भोत छठकर राख्यो है ।

जुहारमल—क्या को ?

गोपीराम—कवे है—थाने परदेश कोनी जाण देऊ ।
 ज्यादा कवागा तो या जीवने पुरोसारो कलेश करण लाग
 कवावेगी । अँ बातको पूरो डर लागे है भोत सुस्कल मंड
 रही है ।

जुहारमल—जणा अँ बातको ओर कोई रस्ती सोचकर
 ठीक ठाक करव्यो ।

गोपीराम—रस्ती के ठीकठाक करा ? वा तो कवे है—
 मेरो गैणू भलाई लेख्यो पण अठेई रवो परदेश मतना जावो ।
 सो ये स्थाणा हो अँया गेणासें कदताई काम धिकायो जायगो ।
 आखर पार तो पडशी कुमाईसें ।

जुहारमल—थारा मन बिलकुल जाणनेई है तो कोई
 मिस लेकर चस्था आव

लिच्छमी—दुकान पर तो जावो भलाई पण ओजुं परदेश जाणैको नाम मेरे आगे मतना लियो । धारे आगे में हाथ जोड़ुं हु ।

गोपीराम—आच्छो, ठीक है ।

(गोपीराम जावे है)

* प्रवेश पांचवों *

ठिकाणो जुहारमलकी बैठक ।

(गोपीराम आवे है)

जुहारमल—(गोपीरामने देखकर मनमें) आज यो गोपीराम कैयां आवे है । आजकाल अँका घरमें तगी है सो रुपया पीसाके ताईं तो कोन्हा ख्यारसी । देखी जासी आवण यो (गोपीरामने) आवो गोपीरामजी, आज कैया पधाया ?

गोपीराम—(हाथ जोडकर) डडोत जोशीजी ।

जुहारमल—सुखी रहो । फरमावो के हुकम है ?

गोपीराम—म्हार घरका हाल तो धारे से छिप्या नई है । काकोजी मखा पीछे तकलोफ ही तकलीफ भोग रिछा हा । अँ हाबतमें प्यारा परसगी सगला नाका दे बठ्या सो यो विचार करा हा कि परदेश जाकर तकदीर तो अजमाणी चावे ।

कर जावागा (पतङो देखकर) आज रातने तो पूवेको सुहरतवी भोत थोष्ट है । इव तो धारा मनका चाया हो गया । सुहरतवो ठीक है, दोनु बात मिल गई ।

गोपोराम—हा । तौसरा बिरामण वचन प्रमाण ।

जुहारमल—हा । या बी ठोक है ।

गोपीराम—ठीक है तो, मे जाऊ इ आजको बिचार पकी रिह्यो । ये रातने सिद्ध करावणने जरूर आपैई आख्यायो ।

जुहारमल—ठीक है ।

(गोपोराम जावे है)

प्रवेश छठो !

ठिकाणो एक गलीको मोड ।

(गोपीराम मोजोराम आमने सामने आवे है)

गोपीराम—(हाथ जोडकर) डडोत बाबाजी ।

मोजीराम—(मुलककर) सुखी रहो । आज कठीने सेल सप्यहा हो आया ?

गोपीराम—(मुलककर) पेसा धारो कयो कठीने आ आया ?

मोजीराम—झारी के पूछो हो । भगकी तरगमें वृमूता

गोपीराम—ये स्याण हो । इसीई कोई जुगती बतावो, जेसे नाठो टुटै न भाठो फुटै ।

जुहारमल—एक काम करो । मुरलियाको माने कहयो—मैं भ्याणो माल ल्यावण जाऊंगो । ऊठेसे माल ताल ल्याकर अठे दुकान करूंगो । बस या कहकर चुपचाप भ्याणोके नाम से सिद्ध कर कर कलकत्ते चल्या जावो ।

गापीराम—वाहजो जोशौजो वाह । अयाई करूंगो । यो रस्तो ठीक है । पण मुहरत तो निकाल द्यो ।

जुहारमल—मुहरतकी या बात है—मुहरत निकाल्या तो कैने बेरो इदर में बणैगोके नई बणैगो, कई रकमका अडास लागसी । एक काम करो—“अ गिरा मन उत्साही ।” अंगोरा रिषोको मत है कि, मनको उत्साह होय जणाबी यात्रा करणी अछ है । सो थारे मनमें आवे जणाई चल्या जावो ।

गोपीराम—वा, जी बाबाजो ! थारला बडकाबी खुब रास्ता निकाल राख्या हैं ।

जुहारमल—अया रास्ता हुया बिना कैयां काम चालै । शास्त्र अवकाश तो सब वाताको देवैई है ।

गोपीराम—जातराके बखत पूजन कराया करे है, जिको कया कराणु होगो ?

जुहारमल—जिको तो ये पेलासे घरमें कई दियो—भ्याणो पेला पोत मास ल्यावण जावां हा सो मुहरत से पूजन करा

त्यार हो ज्यावो । रस्तामें बोलता बतलावता इसी ठहा करता घालांगा ।

मोजीराम—बात तो ये कहीं जिकी सोला आना है । पण ऊठे म्हासे के काम लेवोगा न्हे तो मोजी जीव हां । कदे इसी नई हो ज्याय कि “धोवोको कुत्तो घरको रहे न घाटको ।” अठे पाछा आवण जुगता वो कोनी रवा । ऊठेई हाडिया बिखर ज्याय ।

गोपीराम—जणाके आंट है । अठेसे तो ठीकई है । बठे ग गा माता कन्नई है, जिकी मोक्ष हो ज्यायगी ।

मोजीराम—अै बातको के डर है । अमरपट्टी थोड़ीई हो गयो है । जलम लियो है जिकाने तो एक दिन मरणुई पडसो । कहींभी तो है—

“आया है सो जायगा, क्या राजा क्या रक ।

मरनेका कुछ डर नहीं, रहरे जीव निसक ॥”

गोपीराम—या साची बात है । कबीरजीवों तो कहीं है—

“चलती चाकी देखकर, दिया कबीरा रोय ।

दो पाटा बिच आयकर, बाकी रहान कोय ॥”

मोजीराम—अच्छा बोलो म्हासे के काम करावोगा ? न्हे तो पद्या ठाव हा ।

गोपीराम—अठे हाथ पग कोनी हलायणां पडे के ? बैव्या सुत्याई खाणने मिल ज्यावे है के ?

मोजीराम—बस, अठे तो भगवान घर बयाई भोजन

डोलां हां, पण म्हाने तो मेरा मटा छोरा कोनो टिकण देवें ।

गोपीराम—धाने छोरा के कवें हैं ?

मोजीराम—चोरटाकी नाम लेवें है ?

गोपीराम—के नाम लेवें है ?

मोजीराम—आदाकिशन ! आदाकिशन !! बोले है ।

मेरा मटा पिडोई कोनी छोडै ।

गोपीराम—थे बाबाजी, सुन्या राधाकिशन, राधाकिशन
क्यु बोल्या करोना । अँ नामसे थारो के बेर है ? बोली,
राधाकृष्ण ! राधाकृष्ण ! !

(मोजीराम—बस, बेरो पय्यो । “बाबाजीकी भोलीमें जीव
डाई नोकल्या । बोली सीताराम-।” सीताराम ।। (ठहरकर)
या तो जाण खो साची बतावी कठे जा आया ?

गोपीराम—मैं तो जुहारमनजो जोशो कानी गयी थी ।

मोजीराम—आज जोशीसें के काम हो गयो ?

गोपीराम—(धीरासी) ,जिकर तो करियो मतना ।
दिशावर जाणकी सुहरत कटावण गयो थी । आज, रातनेकी
सुहरत भोत अँठ निकल्यो है । सो आज कलकत्ते
जावागा ।

मोजीराम—बस के ? म्हारे तो थारोई थोडो सहारो थी ।
भाग बुंटे की मनमें आतौ जणां दो थार आना थारसे मिल
ज्याया करता । सो थे वो धर्मधकी दीण लाग गया ।

गोपीराम—थेवी क्यु चानोना । थारे अठे के लपचेड है ?

गोपीराम—में तो घरमें भ्याणोको नाम लेकर जाऊंगा। कलकत्ताको नाम लेनेसे घरमें कलेश होय है सो थ एक काम करियो—आज एक पहरके तडके, गावके बारण पूरबकानी टीबडामें त्यार होकर आयायो। बठे थाने ऊटको आसण त्यार मिलेगो मो कपडा सत्ता घालकर अस-वार हो ज्यायो।

मोजीराम—भोत ठीक है।

गोपीराम—देखियो। थारे मनमें क्यु धुकड चुकड होय तो ईबोसे कै दियो। कदे म्हे छटे खुद्या २ थारी बाट देखवो करा।

मोजीराम—यायी कदे होय है। मेरी जवानने लोकी लीक समजो। मदंकी जवान तो एकई होय है। या कछा करें है—

“सिंहभोग सायुरुष वचन, केन फलै एक डार।

तिरिया तेल हमीर हठ, चटे न दूजी बार॥”

गोपीराम—जणा ठीक। चानो भोत देरी होगई। ईव चाला।

मोजीराम—चालो।

(दोनु चल्या जावें है)

भेज देवे है । अलमस्त पछा रवा हां, भगवान आपई दाह
रोटीको फिकर करे है । वा कछा करें है—

“इजगर पूछे ईजगरा, कहा करत हो मित ।

पडे रहत ऊजाडमें, दय करत है वित ॥”

गोपीराम—अच्छा तो अठेसेवी बेसी ऊठे बैय्या मोज
करवो करियो । भगवानकी दयासे रोटी न्हाने मिलेंगे
जणा तो थाने वी मिलेंगे । कदाचित् कानोमाई आपणी
सुण लई तो गैरो दूदिया भाग घोटियो । धोडोपर बैय्या
आनन्द करियो ।

मोजीराम—या बात है जणा जरूर चानम्या । देखो,
जायगी—“के तो घोड़ी घोडामें, के चोरा लेई लई ।” भोले
मुणखी जणा तो गैरो दूदिया छणेईगी । नईस रोटियोंकी
हामी थे भरोई हो । पीछे न्हाने और के चाये है ।

गोपीराम—(छाती ठोककर) इम्मे साय, रोटियोंकी
हामी तो न्है भराई हा पण „रस्ता खर्चको डोलडाल तो
है ना ?

मोजीराम—थेबी सु चियामें गोनी देवो हो । न्हारे
कन्ने के डोल देख्यो । वा कछा करें है—“मरी क्यु तो सास
कोनो आयो ।”

गोपीराम—आच्छो बाबा । दुख और सुख, खर्चो वी
न्है दे देवागा । पण बठे थार पैदा होय जणा दे दियो ।

मोजीराम—जरूर । जरूर ॥

लिहमी—या तो ठीक । पण आज रातनेईं भ्याणी जावोगा के ? घारे विना मेरो मन लागणुईं सुस्किन है ।

गोपीराम—पाच चार दिन तो लागैईंगा । घणा दिन थोड़ाईं लागैंगा ।

(इतणामें सुरली आवे है)

सुरली—(लिहमीने) मा ! के करे है ?

लिहमी—(पुचकारकर) बेटा, आव । देख, तेरा काकीजी आज भ्याणी जाय है ।

गोपीराम—(लिहमीने) बावली है के ? छोराने क्व लगावे है । टावर है और गेल पड ज्वावेगो तो पिछो छुटाणु सुस्किन हो ज्वायगो ।

सुरली—(गोपीरामकी गोदीमें बैठकर) काकीजी ! भ्याणी जावो हो के ? कोनी जाण देख । जावोगा तो मैं बी सागे चालुंगी ।

गोपीराम—(पुचकारकर) बेटा ! तेरो मा तो बावली है । तन्ने जोरामरदौ बेकावे है । कठे जावा हा, कठेईं कोनी जावा । अठेईं रयागा ।

सुरली—थे झुठ बोलो हो । मन्ने भुलावो हो ।

गोपीराम—बावला बेटा ! तेरेसै झुठ थोड़ाईं बोला हा ।

लिहमी—(सुरलीने) नईरे । कठेईं कोनी जाय ।

(इतणामें भूरो आवे है)

गोपीराम—आवर, भूरा ! आज तो भोत दिनापर आयो ।

* प्रवेश सातवों *

ठिकाणो गोपीरामको घर ।

(गोपीराम आवे है)

गोपीराम—(लिछमीने) या ले, मुरलीकी भा । तेरे मन माफिक काम हो गयो । तुं जीती और रहे छाया । सेस में तेरीई बात भाल रेगई ।

लिछमी—(मुलककर) कौया ?

गोपीराम—बस, तेरीई डिगरी होगई । परदेश जाणेकी तेरे कोनी जची जणा रहे अठेई काम करणेकी विचार लई । भ्याणीसे भाल ल्याया करागा और अठे बैठा बेचा करागा ।

लिछमी—बस, ठीक है । अंयाई कथा करो ।

गोपीराम—एक काम करणुं होगी । सगली गेणुं मने देणो होगी । जिको ज ने कोईके धरकर रुपया लियावागा । जई रुपया से भ्याणीसे भाल ताल ल्यायकर अठे दुकान कर लेवागा ।

लिछमी—गेणुं तो सगलीं त्यार है । थारोई है धारे जचे छद ले लियो ।

गोपीराम—जुहारमलजीने पूछो यो सो आज तडकाज को सुहरत भाल ल्यावणेकी चोखी बतायो है । पैला पोत भाल ल्यावण आवे जणां सुहरतसे पूजन कराकर जाणु चाये सो रातने पूजन कराकर चल्या जावागा ।

मुरली—(गोपीरामने) देख ल्यो, ये ऊटना भाड़े फरो हो ।

गोपीराम—बेटा । ये तो दूसरा आदमीके तर्हि भाड़े कया है । जा, थोडोसी बार बारण्य खेल ।

(मुरली जावे है)

लिहमी—सज्जा होगई है । मैं तो रसोई तयार करूँ हु ।

गोपीराम—छा । करले । थोडो घूरमू वो सुगनको कर लिये ।

लिहमी—कर ल्यु गी (रसोई करण लाग ज्यावे है)

(गोपीराम पिलगपर आडो हो ज्यावे है)

गोपीराम—(मनमें) साचो बात है—दिन करावेसो बेरीबी नई करावे । देखो, कितणी २ झूठ बोलणी पडी है । छोरो मेरे बिना एक पलक कोनी रवे, पण सुत्याने छोडकर जाण पडसी । मुरलियाकी माने कलकत्ते गयाकी बेरो पटसी जणा देखी जाय भैंका के हाल होसी । या रामकी बेटी नाम लेणेसेई सास भारे धी सो बेरो पट्या पीछे तो पूरोई जामे कलेश करेगी । एकवर तो आपण बी गावसे नौकलताई मन लागण मुस्कम है । इबोसे चित्त भीतरसे उदास हुयो आवे है । कलकत्तेमें कीईको रुहारोवी नई है । जाताई देखी जाय किसोफ मिसल बैठे । भोजीरामने अमान दे दई जिको ऊको बीनवी आपणे सिरपरई आ गयो । पण युद्ध परदा नई । भीतरसे विश्वास होय है कि, पुचताई

भूरो—दूबके दूरको भाडो हो गयो थो जणा घणा दिन
लाग गया ।

गोपीराम—आज तेरा दोनु ज'ट अठेई है के ?

भूरो—हम्वै जौ, अठेई है ।

गोपीराम—आज रातने नारनौल चल्थो चालसी के ?

भूरो—चल्थो चालु गो ।

गोपीराम—बोल, के भाडो लेवेगी ?

भूरो—रुपीडा चार दे दियो ।

गोपीराम—चार तो ज्यादा है । रुपया तीन चेरासा
ले लिये ।

भूरो—के आंट है । थारि जचे सो दे दियो ।

गोपीराम—रातने एक पहरके तडके कुची करका
आव्याये ।

भूरो—ठीक है, मोत चोखो ! इव तो मै जाऊं हु,
ऊटाने चरा प्याकर त्यार करणा है ।

गोपीराम—आच्छो जा । पण देखिये रातने जकाचूव
नई होज्याय । कदे दोनों दीनसे जाता रवा । या त
मतना कर दिये—

“पेली तो हुयो जोगी, पीछे हुयो कुम्हार ।

दोनू बोई बूबमा, आदेश न जुहार ॥”

भूरो—नईजी ! रातने जरूर आव्याऊगी ।

(भूरो जावे है)

मुरली—(गोपीरामने) देख ल्यो, ये ऊटना भाङ
फरो हो ।

गोपीराम—बेटा । ये तो दूसरा आदमीके तर्हि भाङ
क्या है । जा, थोडोसी बार बारण खेल ।

(मुरली जावे है)

लिङ्गमो—सच्चा होगई है । मैं तो रसोई तयार करू हू

गोपीराम—हा । करले । थोडी चूरमू वो सुगनकी
कर लिये ।

लिङ्गमो—कर ल्यु गी (रसोई करण लाग ज्यावे है)

(गोपीराम पिलगपर आडो हो ज्यावे है)

गोपीराम—(मनमें) साचो बात है—दिन करावेसो
वेरीबी नई करावे । देखो, कितणी २ भूठ बोलणी पडो
है । छोरो मेरे बिना एक पलक कोनी रवे, पण सुत्याने
छोडकर जाण पडसो । मुरलियाकी माने कलकत्ते गयाकी
बेरो पटसो जण देखी जाय रँका के हाल होसी । या
रामकी बेटो नाम लेणैसई सास मारे घी सो बेरो पट्या पौछे
तो पूरोई जौमें कलेश करंगी । एकवर तो आपण बी गावसे
नौकलताई मन लागण सुस्कल है । इवोसे चित्त भीतरसे
उदास हुयो आवे है । कलकत्तेमें कीईको रुझारोवी नई है ।
जाताई देखी जाय किसोक मिसल बैठे । भोजीरामने जबान
दे दई जिको ऊको बोजवी आपणे सिरपरई आ गयो । पण
कुछ परवा नई । भीतरसे विश्वास होय है कि, पूछताई

कोली माई बेडो पार कर देगी । कुमाईको ठग बैठताई
टावराने घठेसे बुला लेवागा (कुछ समझकर) ओहो !
देखो, इतनीई देरमें मनमें के के लहर उठण लाग गई ।
साची कट्टा करे है—

“मन लोभो मन लालची, मन चंचल मन घोर ।

मनके मते न चालिये, पलक पलक मन ओर ॥”

(इतनामें लिछमी हिलो मारे है)

लिछमी—आवो, रसोई त्थार है, जोमख्यो ।

गोपीराम—आच्छो मुरलीने आपण दे ।

(इतनामें मुरली आवे है)

मुरली—(लिछमीने) मा । रसोई हो गई के ?

लिछमी—हा । हो गई । तेरा काकोजीने बला ले ।

मुरली—(गोपीरामके कत्ते जाकर) काकोजी ! चालो
रसोई जीमख्यो ।

गोपीराम—(ऊठकर) चालो बेटा ।

(गोपीराम मुरली जोमे है)

मुरली—(जीमकर) काकोजी ! चालो आपा तो आपणा
चोबारामें सोवागा ।

गोपीराम—(जीमकर) हा ! चालो बेटा ।

(दोनु चोबारामें जावे हैं)

लिछमी—(जीम जुठ चोको बरतण करकर) चालो
जीवडा सोवा । पछे तबकाऊकी ऊठण है । (गोपीराम

कौ कन्ने जाकर) ख्यायो थारा पग दाव दू । पीछे तो ये जावोगा ।

गोपीराम—जावागा तो के है । पांच प्यार दिनमें पाछा थान्यावागा ।

लिछमी—पांच दिन तो पांच बरस बराबर नीसरेंगा ।

गोपीराम—(मनमें) ऐसैं इव ज्यादा बोलणु ठीक नई । ज्यादा बोल्या भेद खुल जयायगो (ऊपरसे) मन्ने तो इव नींद आव है । मैं तो सोऊ हू (सो ज्यावे है)

(लिछमी मुरली की सोज्यावे हैं इतणामें आधी रात ठल ज्यावे है)

जुहारमल—(हिलो मारे है) गोपीरामजी ! गोपीरामजी । ।

गोपीराम—(जागकर) कणो ? जोशीजी !

जुहारमल—हा ! बखत होषामें आगयो है ।

(इतणामें भूरी दो ऊट लेकर आवे है)

जुहारमल—पेला दोनु ऊंटापर कपडो लत्ती घालकर त्यार करल्यो ।

गोपीराम—(ऊंठ त्यार कराकर) ऊंठ तो त्यार है । इव बोसो ?

जुहारमल—घालो पूजन करावो, टेस हो मई ।

गोपीराम—चासो (पूजन करावे है)

(भूरो छटाने आगे २ खीच लेवे है, गोपीराम गैल २ सिद्ध कर ज्वावे है) ।

गोपीराम—(टीवडामें पू चकर) मोजीरामजी पूं च्याक, कोनी पू च्या ।

मोजीराम—त्यार हुं ।

जुहारा मल—बस तो, देरी मत करो, स्यो गणेशजोको नाम ।

(गोपीराम मोजीराम छ टापर चटकर पूर्वने सिद्ध कर ज्वावे है)

प्रथमांक समाप्त ।



अंक दूसरा ।

● प्रवेश पैलो ●

ठिकाणी हबडाको स्टेशन ।

(गोपीराम मोजीराम खद्या है)

मोजीराम—(चारु' कानी देखकर) ओहो ! कठे आगया । मेरी तो तोरन फुल गई । में तो मेरी कमरमें इसी जगा कठेई कोनी देखो ।

गोपीराम—इवी के हुयो है । अकल तो चरख होगी रुहर देख्या । वा कद्या करे है—“बावाली तिच्छक तो भोत' चीडा कद्या, बच्चा सुक्या फाटसी ।”

मोजीराम—इसीके ! म्हे तो या ठेसण देखः करई चक्रा गया ।

गोपीराम—आच्छ्यो तो, ईव बोनी, कठे चालणु चाये ?

मोजीराम—धारे जचे जठे चालो । मन्ने तो भूख लाग्यार्ह पैली भैंकी ऊपाय करो ।

गोपीराम—बावाली ! नो बजेई क्वाकी भूख लाग्यार्ह । घ्यावसख्यो हाम्म दिन ऊग्योई है, रोटीवी मिसल प्यायगी । धीरा २ सगली मिसल बैठ प्यायगी ।

मोजोराम—आपणे तो रोटियाकी तजबीज पैला करो और मिसल भलाई पीछे बठायो । पैला पेट पूजा होणी चाये । वा कछा करे है—“पैला पेट पूजा, पीछे काम दूजा ।”

गोपीराम—बाबाजी । थारे कैया रोटि २ लाग गई । कैया भूखे व्याघकी क्यु करे लागा ?

मोजोराम—ओर अठे के भक मारणने आया हा । यो पेट पापीई तो खराब करे है । भूख नई लागती तो इतणी दूर लुगायाने एकलो छोडकर कैया आवता ?

गोपीराम—(मुलक कर) निचाणीजी याद आगया दीखे है ।

मोजोराम—ये वखत तो बधुई याद आवे ना । पेटने पिलुरिया खडे है ।

गोपीराम—पेटका पिलुरियाको ऊपाय बी हो ज्यासी । पण एकवर डेरो डाकडो तो जचण थो । बोलो कठे चाला ?

मोजोराम—कठेई चालणने जगा नई है तो धर्मशाला में चल्हा चालो । धर्मशाला तो अठे घणोई होगी । इतणु बडो सहर है धर्मशाला किसी कोनी होगी के ?

गोपीराम—जिको तो पुछां बेरो पटसी । (एक भाई-मीने) क्वजी । अठे कोई धर्मशाला बी है के ५ ।

एक आदमी—हा, है । हरीसनरोड पर तीन धर्मशाला चौतपुररोडकी मोड़पर है ।

गोपीराम—ऊठे ऊतरणे को आराम है ना ? कै की धर्मशाला है ?

एक आदमी—आपण सारवाडीयाकी है । ऊठे ऊतरणे को पूरो आराम है । छोडोपर भोत भलाभाणस जमांदार रवे है, सो धाने खाली कमरो बतादेवेगा जिको ऊंमें ऊतर, प्यायो । एक भाको सुटियो कर हयो सो वो थारी असवाव सिरपर धरकर धाने आपई, धर्मशाला पुंचा देखेमी ।

गोपीराम—भाको सुटियो क्थाने बोले है ?

एक आदमी—सिरपर छावडी सियां डोले है, जिका मजुर लोगाने । छावडीको नाम भाको है, मजुरको नाम सुटियो है । अठे ये रकमका भाका सुडिया भोत डोलें है । देखो । मैं इसी बुसाळ हूँ (हेलो मारे है) ये भाका । ये भाका ॥

भाको सुटियो—(कसे थाकर) बोलिये ?

एक आदमी—(गोपीराम मोजीराम कांनी हाथ कर कर) ये लोग हरीसनरोडखानी धर्मशालामें जायगे । सो इनको पछ्चादे, बोस क्या लेगा ?

भाको सुटियो—दू आना लेव ।

एक आदमी—दो आना नहीं । खैर । पांच पैसा ले लेना । जायो जलदी पछ्चा तो

भाको सुटियो—बहुत अच्छा (असबाब सिरपर धरकर चाल पड़े है) ।

(गोपीराम मोजीराम भाका सुटियाऊँ गैल २ धर्मशालामें चल्या जावें है) ।

* प्रवेश दूसरो *

ठिकाणो गोपीरामको कमरो ।

(गोपीराम मोजीराम बेठ्या है)

गोपीराम—(मनमें) कलकत्तोवी दाता विधाता है । कालोमार्दको खेडो है । अठे आयोडाको गुजरान तो चोई जावे है । देशमें सोचि था कलकत्ते चाल कर के धन्दो करागा । यण भलो हो, बिचारे रगलाल रामगोपालको, जिको बिना जाण पिछाण कपडो दे देवे है सो दिनभर फेरी करकर बेचबी करा हा । सध्याने आगलाको कपडो और बेथ्या मालकी रकम सम्हला देवा हा । नफाका तीन चार रुपया रोजीना मिल ज्वावे है जिका आपणे बच जयावे है । रुपया पानसो तो भेला होगया सो इब यो सुगलो काम छोड दीणु चाये । आजकाल कपडाको दलाली चोखी चालै है । जिको चेष्टा करणी चाये ।

मोजीराम—बोनी, कैया गुमसुम हो रिझा हो, के बिचारम गोता लगा रिझा हो ?

गोपीराम—कपडाकी दनानी करणेकी बिचार कराहा ।

मोजीराम—के आट है । या कपडाकी फेरी तो मै करवो करुंगो । अँकी अटकल तो मन्ने चोखीतरा आगई है ।

गोपीराम—जणा तो भोतई ठीक रवेगी । बाबाजी थे बी वेई हो—“पूछो आपकी के नाम, बोल्या बैंगणदास, तो बाबाजीका बाबाजी, तरकारोकी तरकारो ।” म्हाने कीनो वेरो थो थे बी इतणा मीनती हो । छोलण फिरण मै, बात चीतमैं तो धेवी जवरा हो । एक लम्बर उस्ताज हो ।

मोजीराम—म्हारो बजु बात करो हो । म्हे तो चरतियामें उछरतियाके साथ हा । म्हे तो वे हा—“छाये बान्दी ऐसा नर, पीर बबरची भिस्ती खर ।”

गोपीराम—वाह, महाराज वाह । थारो के कैणु, थे तो थई हो ।

मोजीराम—सेठा । परदेशकी मामली है । अठे आलकस कखा कैया काम चाले ।

गोपीराम—बात तो याई है । पण हामण होय वे तो कद्या करे है—“मेरी छातीपर वेर पबो है जिको मुडामें गेरदे । मै तावडामें पबोह जिको छायामें गेर दे ।”

मोजीराम—वे ओर देखो ।

गोपीराम—(स्यामने देखकर) वो देखो, चुंदलियो 'आवे है । आज अने खुब छकावो ।

मोजीराम—कुण चुंदलियो । नैणसुखियो के ?

गोपीराम—हम्बै, वोई है ।

मोजीराम—आवण द्यो । आजकाल योबी सोखोनाईको सेस करे है । घरमें तो मुसा कल्ला बाती खाय है । आख्या में देई साताकी दुहाई फिर रही है । पण कवे है—“मन्ने घड गई सो बाडमेंई बड गई ।”

नैणसुख—(कन्नै आकर) आज के हो रिह्यो है ?

मोजीराम—क्यु आख्यापर काच फिर रिह्यो है के ?

गोपीराम—अैया मतना कवो । अणकी नाम नैणसुख है ।

मोजीराम—ओहो । के कैणु' है—

“आख्या आटी, नाम नैणसुख ।”

“पघा पागलो, नाम फुदकी ।”

“सिरपर खेई, तम्बुमें डेरा ।”

“नानी राड कुवारो मरगौ, दीयताका नो नो फेरा ।”

(गोपीराम हसण लाग ज्वावे है, नैणसुख सरमाकर बैठ ज्वावे है)

नैणसुख—(पेटके हाथ लगाकर) ओहो । पेट कुसके है, दर्द होय है, थोडो चुरण द्यो ।

गोपीराम—ज्यादा खा आया के ?

नैणसुख—के बतावा । एक जघा जीमणवार धी सो बठे
 क्यु बेसी खा आया ।

मोजीराम—मर, गई राड खुटार्कका भोन बिना । पेटतो
 थारोई थो, क्यु नाजकी नास कखाया ?

नैणसुख—(मोजीरामने) कैया अकी बैको बात करो
 हो, मिजाज सिड गयो के ?

मोजीराम—थारो सुरत देखकर मिजाज कैया ठीक र
 रवे थो ? ये सुरतका घणा सोवणा हो ना । जाण्यु आख
 होय कीचरोको सो ।

नैणसुख—बोल्या तो ये बोल्या । ये तो दोखतकाई फल
 लजला है । वा कछा करें है—“ऊपरसे बाबाजो दीखै,
 नीचे खोज गधाका ।”

मोजीराम—वाइजो, बकियाका ताऊजी वाइ । देखो
 जाण्यु, साचलोई आदमी बोलतो होय । पैया आप्याकी
 टावण तो खीचल्यो ।

नैणसुख—क्यु ! दालकी पाणी, तो मिल गयो ना ?

मोजीराम—(मोजीरामने) देखो, नैणसुखजीने क्यादा ?
 मत ख्यारी । ये आपकी घरवालोने के देवंगा (नैणसुखने)
 क्यु जो । आजकाल ये लोग लुगाई कैका घरमें रवो हो ?

नैणसुख—भोलारामजीका ।

मोजीराम—(मुनककर) थारो लुगाई भोलारामजीका
 घरमें रवे है के ?

गोपीराम—(मोजीरामने) महाराज । ये तो मसकरी करो हो । रहे तो सीदो बात पूछी थी, ये दूसरे रास्ते ले गया ।

नैणसुख—(गोपीरामने) आजकल अणक अकलको उजीरण बेसी हो रिह्यो है । जोसुं मसकरीयाको सुहानी जतारै है । पण बेरो कोनी अठे अणका ऊपरला पाट बैठ्या है ।

मोजीराम—(नैणसुखने) हम्बै साय । आप हाडाका धणी हो, नालका बावणिया हो । आप तो आपई हो ।

गोपीराम—राम । राम ॥ या के कही । हाडाका धणी तो भगी होय है । नालका बावणिया चमार होय है । अैयाकी बात कह्या करै है के ?

नैणसुख—ये भगी चमार म्हाने क्युई कवो । रहे थोडोई बुरो माना हा ।

मोजीराम—होय जिका बुरो कैया मानै ।

गोपीराम—(नैणसुखने) बोलो, आजकाल क्यु पैदा पिरापतो बी करी के ? कपडाको बजार तो भोत तेज गयो । लुगावडीने क्यु गैण गुठी बी बणाकर दियो के ? अै तेजीमें सगला सोनाको तागडी बणाली । येवी बणार्क कोनी बणोई ?

नैणसुख—इवके म्हारे पैदावाडी ठबसारुई-हुई । जणा

गौलो गेणा कठ्यासु वणावे था । मोकली पैदा होय जणा
गेणा वणाया जाय ना ?

मोजौराम—अैं वातको के विचार है । आगन्तीकी
कमरमें जोर होगो तो, घणार्ई गेणा करा लेवेगी । एक
शीडकर पांच सोनाकी तागडो हो ज्यायगी ।

गोपीराम—(मोजौरामने) बस, जाण द्यो । मसकरी
तो रेण द्यो (नैणसुखने) बोली, म्हारो विचार दलाली
करणेको है सो थारे के जचे है, कपडाकी दलाली करण लाग
ज्यावा के ?

नैणसुख—अलबत करण लाग ज्यावो । आजकाल कप-
डाकी दलाली को भोत मोकी है सो भगवान चायो तो
जल्दी पोवारा हो ज्यायगा ।

गोपीराम—काल रामनोमी है । कालसेई श्रीगणेश
कर लेवा ।

नैणसुख—बस, धामणनेई पूछणैको काम नई है ।

मोजौराम—(नैणसुखने) यो प छितार्ईको ठेको थारेई
नाम होगयो दीखे है । है, विमाता । कठे बैठौही ।

नैणसुख—(इसकर) टोकणो लेकर चुन भागव्हावो ।
थाने अ ए वाताको के बेरो ।

मोजौराम—चुन बिना तो या चामडी कदेसको सुक गई
होती । बोली कोन्हा आवती ।

गोपीराम—(नैणसुखने) चालो, आपा तो वृमण चाला ।

मोजीराम—चालो, मैवी कपडाकी फेरो कद्याऊँ । थोड़ी दूर तो सागो रवेगो ।

नेणसुख—चालो । चालो ।।

(तोनु जणा जावे है)

* प्रवेश तीसरो *

ठिकाणो एक मारवाड़ोको भकान ।

(मोजीराम बारण खडो है),

मोजीराम—(हिलो मारि है) कपडो लेख्यो ।

रामलो—(बारचामें खडो होकर) वो कपडावाला ।
भीतर आज्या । म्है कपडो लेवागा ।

(मोजीराम भीतर जाण लागी है)

शिवदत्तसिंह—भीतर कहा जई हो ?

मोजीराम—बसोके । म्हाने बेरो कोनी, यो राजा म्हारा
जाको दरबार है ।

शिवदत्तसिंह—मालुम होय है अभी तुम नये आये हो ।
तुम का जानो, कुछ रोज यहा रहिहो तो आपुई मालुम
होज्याई । हमरे बाबु भीतर जाय खातिर मिन्हाई कर
रखीन है ।

मोजीराम—या बताव, तेरी क्युं भेट पूजा करणी पड़ेगी के ?

शिवदत्तसिंह—बस, समज ल्यो ।

मोजीराम—अच्छे ठीक है । भीतर जितनाकी चीज बिकेगी जैको पीसो रुपयो तने दे द्युंगो ।

शिवदत्तसिंह—तब ठीक है । जावो ।

(मोजोराम भीतर चल्थो जावे है)

(लुगाया कपड़ो लेवे है, इतनामें एक लुगाई छटपटाग बकल लाग ज्यार्वे है)

मेवली—(मोजीरामने देखकर) रामका माथा फेरी-
वान्ता, रातदिन जकई कोनी लीण देवे । जद देखो जद
हीठासा बैठ्याई रवे है । एक गयो तो एक आयो । या बी
कोई सराय समज लई । आजकालकी भू बेटो हाथा रह्यो
न बाधा । उघाड उघाड चुडाने भट आ बैठे है । अणका
मोथारबी इसाई है । जणाई ये हो हो करती, दाताने
काडती, फेरीवानासे हासी ठहा करण लाग ज्यार्वे है । म्हारना
जमानामे अयाकी बात मोथार देख लेता, तो जी निकाल
लेता । यो नपूतो जमादारियो बी कोई काम कोन्या कर
सके, बैथ्यो २ डोड कागकी ज्युं देखवोकरे । बाडीवानो
अने छोडीवान मणायो है (बड बड करे है)

मोजीराम—(मनमें) या के आफत आवे है । या चुडेन
सुरपणखा कंकाली कव्यासे नीकन्याइ । या रावणका

बसकी ताडका कठे बाको रे गई ? (लुगायाने) या कुंण है ?

लुगाया—(धोरासी) बोलो मतना । या बणियाणी है । सगली बाडीने हदर कर राखी है । सुण लेगी तो श्रीर भाड गेरंगो । पिडो छुटावणं मुस्कल हो ज्यायगो । बडी करकसा है ।

मोजीराम—खैर ! क्युई हो । अँको डोल देख कर मेरे तो एक कवित्त याद आ गयी जिको अँने जरूर सुणाऊ गो ।

लुगाया—थारी खुशी । या ल्यो, रहे तो जावा हा । थे क्युई सुणावो पण थारो जावतो कर लियो । कदे इसी न हो जो की ध्यारो मड ज्याय । अठामु ऊठण मुस्कल होज्याय ।

(सगली जणी चली जावें है)

मोजीराम—(मुलककर) क्यई हो, देखी जासी (जोरसे बोले है)

थीरी राड बणियाणी, तोकु थार खड जाणी,
जरा प्यावत ना पाणी, घर आया बेटाऊने ।
मूसी बोलत है खारी, नेक दयाहु न धारी,
तु है पूरी हतियारी, समजत ना स्याऊने ।
बहे नासामें सरडा, है हाथ भोत करडा,
तेरे बालामें अरडा, बोलत ना तमीज है ।

ऐसी सुगली लुगाई, तेरे दातोंकी सफाई,
विधनेस ना लुगाई, ना डाकण क्या चीज है।

(सब कोई हसण लाग ज्यावें है)

भेवली—(लोटी हाथमें लेकर) खड्योसी रह रामका
माया । तबे मजो दिखाऊ । आयो है हरबन्धु २ सुणा
वणने (मोजोराम कानी आवे है)

मोजोराम—(मनमें) आई है, चडौ । इव अठे बैव्यो
के धई में हाथ देवै है । कर दे है, माथो लाल । अमें के
सिटो निकाले है इव तो भागणु ई ठीक है । (ऊपरसे) ले
और सुणाऊ ।

“रावडीमें राख राधे, चुन चाटे पीसती ।

देखोरे करकसा राड, चालै पल्ला घीसतौ ॥”

(मोजोराम जावे है)

७ प्रवेश चौथो *

ठिकाणो भोलाराम भीवरानकी दूकान ।

(भोलाराम बैव्यो है)

भोलाराम—(मनमें) धन्य, इंखर तेरी माया । भाग-
वानसे भिखारी और भिखारीसे भागवान, करण तो तेरा बाया

हाथको खेल है । इक्को कपड़ेकी तेजी होणेसे, कई आद-
मियाकी तो पाचू आगली घोमें होगई, पोबारा हो गया ।
कई बिचारा सफाचिट मैदान गलियाराका गीड होगया ।
या सब बिधाता तेरो लोला है । हानि और लाभ सब पर-
मात्मा तेरे ई हाथ है । महाराज तुलसीदासजो वो तो
कही है—

“अछो भरत भावी प्रवल, बिलख कहै सुनिनाथ ।

हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ ॥”

(इतनामें शिवकुमारजो आवे, है)

भोलाराम—पडतजी । पाये लागू ।

शिवकुमार—बाबूसाहब । खुश रहो ।

भोलाराम—पडतजी या के बात है । आजकाल महा
अधर्मी है जिका लखपती किरोडपती हुया जावें है । यो
कलयुग कोई प्रभाव है के ?

शिवकुमार—उनका पूरे पुन्य कुछ बाकी है । इसीसे
वे बढते है । कहा भो तो है—

“जबतक तेरे पुन्यका, बीत्या नही करार ।

तबतक तेरो माफ है, ओगुण करो हजार ॥”

भोलाराम—असल बात तो पडतजी यार्द है । कई
आदमो अनेक रकमका कुकर्म करें है, यिनकेन ऊपायसे
द्रव्यसंचय करणु आपकी प्रधान धर्म समझै है । जेपर बी, वै
रात दिन बढ्या जावें है । और जिका सतसे ईमानसे चालै

है वे धनहीन हुआ जावें है। या कितनी अचबकी बात है।

शिवकुमार—देखना, बाबू साहब ! इन पापी धन पानोंसे वे गरीब धर्मात्मा बहुत अच्छे रहेंगे। अन्तमें भलेका भलाही होगा। ईमानदारी रहनेसे गरीब पुन लक्ष्मीवान हो ज्यायगे। कहानी तो है—

“सत मत छाडो बावरा, सत छोडे पत जाय।

, सतकी बान्धी लक्ष्मी, फेर मिलेगी आय ॥”

। (इतनामें गोपीराम आवे है)

गोपीराम—(भोलारामने) बाबू साब । जयगोपाल बीलो, क्यु लेखी बेचखी के ?

शिवकुमार—(भोलारामने) बाबू साहब ! हमको तो हुकम ही । हम तो चले हैं।

भोलाराम—जायोगा के ?

शिवकुमार—हा ! तो, इस बखत आपके व्यापारकी टाईम है, सो इसमें बाधा डालना उचित नहीं।

-भोलाराम—(मुलककर) अच्छा तो पधारी ! फेर आरंभ हो।

शिवकुमार—ठीक है (जावे है)

भोलाराम—(गोपीरामने) ये कपड़ाको दलानी करो हो के ? पैना तो याने कदेई कोनी देख्या। इब नयाई खद्या हुआ दीखो हो।

गोपीराम—हा । मैं आजसे ई कपडाकी दलालीमें खद्यो हुयो हु' । पैला पोत थारे कन्नेई आयो हु' । सो आज तो क्युं ना क्युं सोदो जरूर बतावणुं चाये ।

भोलाराम—बस के, पैला म्हारै ई कन्ने आया हो के ! अच्छा जावो, पचास गाठ कम्पनी मारकी लियावो, पण (सावलराम कांनी इसारो करकर) आदी दलाली अपने दीणी पड़ेगी ।

गोपीराम—(मनमें) या खूब हुई । वा कह्या करे है—“ऊपरसे गिखो तो, खिजूरमें अटक्यो” (डपरसे) ये कुण है ?

भोलाराम—ये तो म्हारै भोवेका मामा है ।

गोपीराम—(मनमें) अ कलकत्ताने तो मेरा मटा सालाई सर कर लियो । चुकती फार्माके मालकांकी नकेल आपका हातमें ले लई । या दलाली तो ढबको रे गई । बिना परसंग क्यांकी दलालो, मृतगाधना करणा है । अ मालकाकी बुदी तो साला गुद्दी पीछे कर दई । साची बात है—“भीतने खोयो आला, घरने खोयो साला ।” पण कुछ परवा नई, एक कबित बडा बाबूने सुणाकर अँको चूद तो खोल दीणी चाये । धर्णी करेगा तो दलालो कोनी बतावेगा । सो के बात है ? वा कह्या करे है—“गखगोर रुसेगी तो आपको सुहाग राखेगी ।” (ऊपरसे) बाबु साब, ये लोग सालाकी भोत पकस करो हो, सो एक कबित तो सुण ल्यो ।

भोलाराम—(मुलककर) के कवित है ? देखा सुणावो ।

गोपीराम—(मुलककर) ल्यो सुणो ।

“बैनणोको भाई जाण, तन्ने में सुपो दुकान,
तकियाकै रहारे बैय्यो, भोज तु छडाया कर ।
जित्ता है नीकर मेरे, रहै सै अधीन तेरे,
गहो ऊपर बैय्यो तु, हुकम चलाया कर ।
हिसाबकोनई दावो, थारे जचै सो लिखावो,
आप खुब खावो चाये, घराने पूचाया कर ।
गाडी जुतवावो बैठा, मोटरमें हवा खावो,
भैश्कै परतापसे, भोज तु छडाया कर ।”

सब जणा—(हसकर) वाह, साय ! यी कवित तो
। सोवण सुणायो । देखो के के नाका म्याया है ।

भोलाराम—(मुलककर) ये तो दलाल भाइ है ना ।
यी बात बणाया, बिना कैंया काम चालै । दो दुकानदारा
सिर जोडणु हासौ खेल थोडोई है । भोत मुस्कलको
र है ।

सावलराम—(गोपीरामने) थे बी तो कोईका सीला हो ।

गोपीराम—म्हारी भणैई लखपती हो तो, तो थारी
म्हारी ना कदर हो ज्याती ।

भोलाराम—(सावलरामने) ल्यो सुणो । क्यु और
। नी बाकी है तो और सुण ल्यो ।

(सावलराम मू नीची कर लेवे है)

गोपीराम—(भोलारामने) झोलो, गांठाके वास्ते के हुकम होय है ?

भोलाराम—हा, जावो । पच्चास गांठ बीस रुपयाके भावमें लिखावो दलाली थारी पूरी रै ज्यावेगी ।

गोपीराम—बाबू साव ! भोला ढालाको, राम खुाली थारो तो नाम है, जिसाई रिछा करो । सेठ तो भोला ढालाई हुया करें है ।

भोलाराम—बाबाजो, म्हे क्याका सेठ हा ।

गोपीराम—लिखसीवान् हो । मूँडा आगे मोकलें रुजगार है, सब बाता ईश्वरकी दीन है । आप सेठ हो ।

भोलाराम—मैं तो सब भायाको दास हुं । गोपीरामजी के पूछो हो । घणीई बिपत भोगी है । (सिर दिखाकर) या देखो, मोट ढोवता २ मेरी टाट गजी हो गई । या तो अढ़े आया पीछे कालोमाई सुण ली, जणा दो पीसा चोख पैदा हो गया । जे बखत गरीबी हालत थी, जे बखत मेरा मटा सै जणा मूँडा मोड मोड चाले था । ये सगला ईबी कुशामद करण लाग्या है । सो म्हे तो देख लो आदमी की ढलती फिरती छाया है जिकी जो कुछ बणतीमें आवे सो गरीबको उपकार करण चाये ।

गोपीराम—बसके ! म्हे तो म्हारे ई वास्ते समजेथा कि, दुनियामें थेई गरीब हो, थेई या बिपता भोग रिछा हो ।

बात सुणकर तो यो विश्वास बी होय है कि, कदे ना
म्हारी दिन बी बावडैगो ।

भोलाराम—सो के बात है । नीत साबुत राख्या, हिम्मत
घोडै मवार रिझ्या तो जरूर बावडैगो । नीत खराब
या, हिम्मत हार ज्यायास क्यंई होयना । क्यु की ईमान-
कीका पिसाने बढता देर कोनी लागै । कबोरजी बी तो
ही है—

‘कबोर कुमाई आपकी, कदे न निस्कल जाय ।

बोवे पेड बबुलका, आम कहासे खाय ॥”

गोपीराम—हा । या तो ठीकई है । नीत गेलई बरकत
। तथा आदमीका कर्म बी चोखा होणा चाये । चोखा
मांसें सब पदार्थ मिल सके है । कर्महीनके वास्ते ससारमें
हबी नई है । ‘महाराज गुसाई तुलसीदासजी ठीक कहो
कि—“सकल पदार्थ है जगमाही, कर्महीन नर पावत
ही ।”

भोलाराम—या बी ठीक है (टहरकर) जायो । यो
ठाकी सोदी तो ः पक्षी कखावो ज्यु थारी दलालीको
हुरत तो ठीक हो ज्याय ।

गोपीराम—थारी इतनीं मेहरवानगी है, जणा थारे स्यामने
ठुठ बोलणु बी ठीक नई । मेरे कर्म घेई भावकी रगलाल
तीकी परवानगी बेचणेकी है, सो मांडख्यो ।

भोलाराम—जणा के आट है (बही में लिख लेवे है) ।

गोपीराम—अच्छा तो मैं चालु हू । जयगोपाल ।

भोलाराम—जै गोपाल ।

(गोपीराम जावे है)

● प्रवेश पांचवों ●

ठिकाणो गोपीरामको कमरो ।

(गोपीराम भोजौराम बैठ्या है)

भोजौराम—(सुखो सुखो गावे है) “आया धमेडा,
रूपकमेडा मारा भवेडा स्हरमें ।”

गोपीराम—अँया ऊटपटाग ढडारा गीतके गावो । आज
तो एक निहलदेकी कडी सुणावो ।

भोजौराम—खो । निहालदेकी सुणो—

“ऊजड खेडा फिर बसे, निर धनियो धन होय ।

गयान जोविन बावडे, सुवायेन जिन्दा होय ॥”

गोपीराम—बस, रँणयो, सुणलियो । यो तो कलेजा
माकर पार हो गयो । अब तो मुरलिया होराने जल्दी
बुलावागा । आजई जाकर तार देवांगा ।

भोजौराम—ये तो मुरलो होराने बुला लेवोगा पण या
बतावो रुँके करागा ?

गोपीराम—ये वो मिश्राणीजीने बुनानियो । एक छोटे कमरे लेकर रैवो करियो ।

मोजीराम—रूहे तो देशमेंई राखस्था । मिश्राणीने अठे बुनाकर किसी बणियाकी शिकार बणाणो है । थारो आज स्यात मेंई प्रेम कैया कजल्यायो ?

गोपीराम—वो थारलो निहालदेको दुवो गजब घास गयो । कालजा माकर पार होगयो ।

(इतनामें मगतूराम आवे है)

गोपीराम—(मोजीरामने) देखो, स्यामने मंगतूराम आवे है, सो अँसेई हामो ठग़ा करो ज्यु चित तो खुसो होय । यो पचास बरसको हो गयो पण अँ की हालताई सगाई कोनी छुई है ।

मोजीराम—बसीके, जनम राखियोई है के ?

गोपीराम—(धीरामो) हम्बै । चुपचाप रवो ।

मगतूराम—(आवतोई) कैया पद्या हो ? जाण्यु नन्दी भुवाकर डिगारै गीर गई होय । के सत्ता है ?

मोजीराम—केसुला तो पसारिया के है । आवो येवी पड ज्यायो ।

मगतूराम—रूहे किसो लुगाई हा, पड ज्यावां ।

मोजीराम—ये लुगाई सार के जाणु । वा कछा करें—
हे—“बन्दर के जाणै अदरख को सुवाद ।”

मगतूराम—वा, ये के समजो हो ? वा कछा करे है—
“व्याया कोनो तो जनेत तो जरूर ई गया हा ।”

गोपोराम—(मोजोरामने) मगतूरामजोने ये के कमतो
समजो हा । वा कछा करे है—“हु तो गावकी बेटी, पण
भू वा सें बी वैसे पडु छ’ ।”

मोजोराम—या भलाई हो । पण ये देख लियो, ये कुवारा
आगला जलम में कुत्ता हांयगा । भू भू करता डोलेंगा ।
देखो, थाने एक कुवारा को कबित्त सुणऊ ।

“जो दुनिया में कुवारी, वाको धृक है जमारी,
प्रभू नेक दया धारो, सुफल जिन्दगानी हो ।
ऐसी के मैं कोनो चोरी, दौनो नही एक गोरो,
बेगही मिलावो जोरो, ऐसी महरवानी हो ।
सुनोजी लगाके कान, कुवारिको बचे ज्ञान,
देखो एक नार दान, बावरी वा दिवानी हो ।
या कुवारिको पुकार, ये सुणियो करतार,
बकसद्यो एक नार, चाये अन्ही या काणो हो ।”

गोपीराम—बस । बस !! रेणदो । मगतूरामजी न
ज्यादा कायल मतना करो । कुंवाराका किस्सा न्यारा गाम
बसे है ।

मगतूराम—रुहाने ये के कायल करस्यो । रहे तो आप
चादता भैंसा हा ।

मोजीराम—(मगतूराम कानी हाथ करकर) हे सीतला माता ! ठण्डका भोला देई ।

गोपीराम—(मगतूराम कानी इसारो करकर) येतो बारा वरस जलाग गया ।

मोजीराम—बारा वरस जलाग गया तो जे है ? व्या नई होय जितणे टावरई समजणों चाये ।

गोपीराम—(मगतूरामने) खैर, हासी ठट्टा तो जाणव्यो, या बतावो दलाली में तो पेटा लिवाडी ई होवे है सो इसी कुणसो काम करा जेंका करणासे पेदा पिरापती चोखी होण लाग ज्याय ?

मगतूराम—रुईको पाटियो करल्यो । आजकाल तेजी चाल रही है सो मोको देखकर साचो डाय धरव्यो । भगवान चाये तो गैरा हो ज्यायगा ।

गोपीराम—ठोक है, या मेरेबी नच गई । काल सेतोई यो काम सुरु करागा । कालको दिनयी चोखो है । दलाली में बाबुजी, बाबुजी कहता २ कंठ सुष्ट गया । गोडामें पाणी पड पयो । इसी बाड़ामें चाली दुकान भाडे लिखायावा । छटे कासेई डाकघर है जिको सुरनिया छोराने बुलाणेको तार यो दियावागा । एक पन्थ दो काज होज्यावेगा ।

मगतूराम—भोत ठीक है । चालो ।

मोजीराम—(मगतूरामने) देखियो, सीडियामें चोकस जतरियो । पडो तो हाथ आगेने फाड दियो ।

मंगतूराम—म्हारो फिकर मतनां करो । ये धारी निगै
राखियो (नाड हलाकर)

“कृष्ण नाम लडूवा, गोपाल नाम घी ।

माधवनाम खीरखाड, घोलघोल पी ॥”

मोलीराम—वाहनजी, सीतला वाहनजी । क्या बात है ।

(गोपीराम मंगतूराम धँसा जावे है)

* प्रवेश छठे *

ठिकाणो गोपीराम मुरलीधरकी दुकान ।

(गोपीराम बैठ्यो है)

गोपीराम—(मनमें) भाग चकर घूमतो है । मुरलीया
होराको पग फेरो हुयो तो है । अण्को आवताई मेरा होगया ।
इब जिका काममें हाथ घाला हा तुरत फायदो होव्यावे है ।
ये सब सुदा दिनकाई लीकण है । एक नाखको इष्टाक तो
आजताई होगयो इब के है इब तो ऐसे घणोई मार बैठी
करागा । आपणें अँ बखत रुईकी तेजी को घणुंई ठयापार
है । रुई दिन पर दिन तेज होतो जावे है । आज डाव
एकठोई लगा दियो है जिको केतो दश बीस नाख तुरत

मंगनुराम—नररो फिरत मतना करो । ये घारी निगै
राखियो (नाट रुनाकर)

“छप नाम महुवा, गोपाल नाम घौ ।

माधवनाम श्रीरवांड, घोनघोन पो ॥”

मोजीराम—याहजौ सीतना याहनजौ । क्या मांत है ।

(गोपीराम मंगनुराम घम्या जावे है)

* प्रवेश छठे *

ठिकाणी गोपीराम मुरनीधरकी दुकान ।

(गोपीराम बैठ्यो है)

गोपीराम—(मनमें) भाग चकर घूमतो है । मुरनीया
धोराकी पग फेरी हुयो तो है । अणकै आवताई मेरा होगया ।
इम जिका काममें हाथ घाला हा तुरत फायदो होव्यावे है ।
ये मय सुदा दिनकाई लीछण है । एक भाखुको दृष्टाक तो
आजताई होगयो इम के है इव तो जैसे घणीई मार बैठी
करागा । आपणें जे बखत रुईकी तेजी को घणुई छयापार
है । रुई दिन पर दिन तेज होती जावे है । आज डाव
एकठोई सगा दियो है जिको केतो दश बीस नाख तुरत

फुडत मिल ज्यवेगा । के पैला जिता हो ज्यवागा । दीण-
दारौ होज्यवेगी तो कुमाकर दे देवागा ।

(इतनामें घीशाराम आवे है)

गोपोराम—(घीशारामने देखकर मनमें) आज यो
घीशो देशसे चठे कँया आगयो (ऊपरसे) आयो । घीश-
रामजी ।

घीशाराम—आगया ना । म्हे देशमें सुखी इमकौ तो
गोपीरामजी लखो मार दियो । या बात सुणकर चित्त
भोत खुशो हुयो ।

गोपीराम—ठीकई है । आपवालाको तो जी राजीई
हुयो चावे ।

घीशाराम—(सरमातो हुयो) एक काम है ।

गोपोराम—बोली ? सरम सकोच करणेको कौई बात
नई है । ये धारा दिलमें कुछ विचार मत स्थायी । वै बात
तो वेद थी इध ऊ बाताको के विचार है ।

घीशाराम—जगन्नाथजी लाकर आया हा सो खरची
निमड गई रुपया पचीस चाये है ।

गोपीराम—(एकमी रुपया को लोट हाथमें लेकर)
ख्यो । लेज्यावो । थारे कनै हु जणा धर्म खाते लगा दियो ।
मनै पूछणै की और भेजणै की दरकार नई है ।

घीशाराम—(रुपया लेकर) सेवारामजी बी आया हैं ।

गोपीराम—हैं ! कद आया ? कठे उतग्या है ?

घीशाराम—देशमें देखा २ सोदा सदा यथा । निकी नुकसान गैरो लाग गयो । रुपया पाच हजार गावका दीण रह गया जिकी रात्युरात टापराने नेकर अठे आया हैं । थारे कन्ने आवता क्युं सकीच करे घा पण मैं कह आयोइं सो आवताइं होसी ।

(इतणामें मोजीराम आवे है)

घीशाराम—(मोजीराम कांनी हाथ जोडकर) डंडोत महाराज्जी ।

मोजीराम—(मुलककर) सुखी रहो । बोली गिंवाकी के भाव है ? याद है क ना ?

घीशाराम—(सरमाकर) थारे जेचे सो कवो एव घणई पिस्तावो है पणके कग्यो जाय गई बातने तो घोडाई कोनो नावडै । लाव पग तलासे नीकलगी सो नीकलगी (सुह नीचोकर लेवे है)

(इतणामें सेवाराम आवे है)

सेवाराम—(मोजीरामने) महाराज्जी डंडोत ।

मोजीराम—सुखी रहो । चिरंजीव रहो ।। कहां बावडो को बाता ? बावडी कैया छोद्याया ?

सेवाराम—(सास मारकर) मगवान छुडा दी जणा छोद्याया ।

गोपीराम—(सेवाराम का पगामें धोक खाकर) आवो । ऊपरने बैठो ।

सेवाराम—लालजो ! इब रहे ऊपरने बैठण लोयक नी रिह्या । भगवान एक बरती म्हाने घेले सस्ते कर या । औ बखत म्हारे सें जमीनकी धूल बी चोखो है ।

गोपीराम—बाबाज, योके बिचार जीवमें त्यावो हो, रज राखो सा ठोक हो ज्यायगो ।

सेवाराम—रुपया पाच हजार गावका दोणा है सो जिके न वै रुपया देवागा जणा जियाका जलम पावागा ।

गोपीराम—अ बातको के फिकर है (पाच हजार का ट हाथमें लेकर) ल्यो । ये देश भेजकर मागततो चुकवाद्यो । ई एक काम करो धेई पाछा देश चल्या जावो । हरिप्रसाद मप्रसादने मेरे कन्ने छोड ज्यावो । 'पण देखो इब देशमें दो सटो बिनकुल मत करियो । होय जिसा कामकी आपणों हाल राखवो करियो । देशका धेई मानक रिह्या । थारे च लागे सो हुन्डो करवो करियो ।

सेवाराम—ठीक है । रहे और घीशाराम से जणा सागेई ल्या जावागा । छोरा तेरे कन्ने रहवो करेगा । देख, जाला ! मेरे कानीको कोई रकम की जीमें स्थाल होय तो फ करिये ।

गोपीराम—राम ! राम ! । या के कवो हो । मेरे तो माईता समान हो (घीशारामने) देखिये, न पणने चोखी रा लेज्याये । और पाच प्यारसो रुपया तन्नै कदे चात्रे तो

अ'णसें लेवो करिये (सेवारामने) घीशारामने पाच चारसो रुपया चाये जणां थे देवो करियो ।

सेवाराम—भोत ठीक है ।

घीशाराम—अच्छा तो जावा हा । ' जयगोपाल ।

गोपीराम—अच्छो भोत राजी २ जायो ।

सेवाराम—मैंबी जाऊ हूँ ।

गोपीराम—हा । पधारो मलाई ।

(सेवाराम लुगाया पतायानि साथ लेकर घीशाराम के साथ देश चल्थो जावें है, हरिप्रसाद रामप्रसाद गोपीरामकी दुकानपर काम करण लाग ज्यावें है)

॥ प्रवेश सातवों ॥

ठिकाणो गोपीराम सुरलौधरकी दुकान ।

(गोपीराम बैठ्यो है)

गोपीराम—(मनमें) साची बात है । कलकत्तामें एक रात में गरीब से लखपती और एकद्वे रातमें लखपती से कांगाल होज्यावे है । दो दिन के भीतर बीस लाख रुपया मिस्था है । इब के है, इब तो अठेका बडा बाबु जिका नाक

भूँडो मोखा करता, जयगोपाल को जवाबर्द कोनी दिया करता जिका मत्तेई छे वठावण लाग् ज्यारिंगा । कुसा मदिया टट्, वाकीस गिणतीई के है, वैतो घणाई शाची गोपाल हा मे हा मिनावणिया हाजरी दींगा । मभा सुसाईटिया मायवी इव मान तान चोखो हो ज्यायगो, जिको सभामे मेखर भोत कोसीस से वणावे या ऊ इ सभामे सभापती को आसण पेला पोत मिलेगो । या सब पिसा तेरोई माया है । पिसा बिना आदमो को क्य, ई मोल ना । कछो बी तो है—

“पिसा बिन बाप कहै, बेटो भोत कतगयो,
पिसा बिन भुट्टू कहै, घरकोई जुगाइ है ।
पिसा बिन भाई बन्द, कन्ने नई बैठण दें,
पिसा बिन सासु कहै, किसको यो जवाई है ।
पिसा बिन भायेनाबो, देख मुडा मोड चनें,
पिसा बिन भाण कहै, यो मेरो नई भाई है ।
पिसा बिन देखो कुछ, दुनीमें आदर नांय,
पिसा बिन आदमोकी, ईज्जत नई पाई है ।”

रामप्रसाद—(मनमें) देखो, ईश्वरकी माया है । जैसे कदे मुडासे कोनी बोलता, यो जराबी बोलतो तो भाड देता, गोपिया सियाय कदे बडी बोली में बोल्या कोन्या । पण बाहरे पिसा और बाहरे तकदीर । इव जेनेई बाबुजी २ कहणु पडे है । जैकी बी छातीने धन्य है जिको ऊ बात की

खयान नहीं करकर भट पांच हजार रुपया एक मुष्ट निकालकर दे दिया । गांवकी करज चुकती करवा दियो । गांवमें रेश जोगा कर दिया । अँको यो गण जलमभर नई भूलण चात्रे । देखो, या सुपना मे वी आशा नहीं थो कि, म्हारो या दशा हो ज्यायगो ओर अँको दिन इस माफक सिकन्दर हो ज्यायगो । मनमें के के विचार कखा करता पण मनजा के टका उठे है । साची कही है—

“मन चाये माया करू, करकर करू गुमान ।

साई हाथ कतरनी, राखेगो, जनमान ॥”

(गोपीरामके नजीक जाकर) बाबुजी, आज, तो रोकड मे दश लाख रुपया पढा है सो के करणी चाये ?

गोपीराम—एक काम करो बक बगाल हिंड हाफिस में भेजकर जमा करवा द्यो ।

रामप्रसाद—भोत चोखो जी ।

(इतणमें भोलाराम आवे है)

भोलाराम—(हाथ उठाकर) जयगोपालजी कौ ।

गोपीराम—आवो ! जयगोपालजीकी ! ऊपरने, बैठो ।

भोलाराम—बाबाज, ऊपर नीचे सब एकई माया है ।

म्हे तो सुणी आजकाल मे काली माईको छपासे धाने दो रुपया भोत चोखा मिन गया है । सो सुणकर भोत खुशो पैदा हुई । मनमें विचार कखो चालकर निसचे तो करणी चाये । देखा साची बात है क भुठी ।

गोपीराम—(नम्रताई सें) हा । आपकी दयासे इंदरमें लेखोई प्राप्तो हुई है । या सब रिंदरोपना थारोई है । ना पोत पच्चास गाठकी दलान्धो की थे रुद्धरत करायो थी कि बाद वारान्धारा होताई गया ।

भोनाराम—सब परमात्माकी माया है (धीरासी) एक काम है ?

गोपीराम—बोलो, फरमाओ ?

भोनाराम—रुपया पच्चास हजार चाये है । भीत भारी डास लाग रही है । आज हुन्डी पूगै है । नई दीणैसैं त्ररु जाती रहैगौ (चांख भरकर) भैं बखत थारे सिवाय तोइ सहारो दीणैवाल्यो नई है । या इज्जत राखणी और पोवणी थारे हाथ है । इज्जत बच जावेगौ तो पैदा बाडो नीई हो ज्यायगी । और कछा करे है—“जावो साख और रहो साख ।” इज्जतको गलई सगला भलावाना है । जत नई बवेगी तो भैं बखत माटीमें मिल ज्यावागा ।

गोपीराम—(धीरज बन्धातो हुयी) घबडाओ मतना । ठीक हो ज्यायगी (रामप्रसादने) रामप्रसाद । पच्चास हजार रुपया भोनारामजीने देदे, भोनाराम भीवगज के पैचा हाति नाव माड दे ।

रामप्रसाद—(पच्चास हजार का नोट तिचुरीसे निकाल र) ये ल्यो । भोनारामजी ।

भोनाराम—(रुपया लेकर) आच्छो ती मैं लाज हूँ

खुद्याल नहीं करकर भट पाच हजार रुपया एक मुष्ट निकालकर देदिया। गावको करज चुकती करवा दियो। गावमें रैण जोगा कर दिया। अँको यो गण जलमभर नई भूलण चाये। देखो, या सुपना में बी आशा नहीं वो कि, म्हारी या दशा हो ज्यायगो और अँको दिन इस माफक सिकन्दर हो ज्यायगो। मनमें के के विचार कथा करता पण मनका के टका उठे है। साची कही है—

“मन चाये माया करू, करकर करू गुमान।

माई हाथ कतरनी, राखेगो जनमान॥”

(गोपीरामके नजीक जाकर) बाबुजी आज तो रोकड में दश लाख रुपया पक्षा है सो के करणी चाये ?

गोपीराम—एक काम करो बक बगाल हेड हाफिस में भेजकर जमा करवा द्यो।

रामप्रसाद—भोत चोखो जी।

(इतणमें भोलाराम आवे है)

भोलाराम—(हाथ उठाकर) जयगोपालजी की।

गोपीराम—आवो। जयगोपालजीकी। ऊपरने बैठी।

भोलाराम—बाबाज, ऊपर नीचे सब एकई माया है।

म्हे तो सुणी आजकाल में काली माईको छपासे, थाने दो रुपया भोत चोखा मिल गया है। सो सुणकर भोत खुशो पेदा हुई। मनमें विचार कखो चालकर निसचे तो करणी चाये। देखा माची बात है क भुठी।

गोपीराम—(नम्रताई से) हा ! आपकी दयासे इंदरमें चोखोई प्राप्तो हुई है । या सब रिंदरोपना थारीई है । पैला पोत पचास गाठकी ढलानो को ये स्फुरत करायो थो जेके बाद वारान्वारा होताई गया ।

भोलाराम—सब परमात्माको माया है (धीरासी) एक काम है ?

गोपीराम—बोलो, फरमाओ ?

भोलाराम—रुपया पचास हजार चाये है । भीत भारी बडास लाग रही है । आज हुन्डी पूगै है । नई दीणैसे आवरु जाती रहैगी (आंख भरकर) अब बखत थारे सिवाय कोई रहारो दीणैवालो नई है । या इज्जत राखणी और खोवणी थारे हाथ है । इज्जत बच जावेगी तो पैदा बाडो घणीई हो ज्यायगी । और कह्या करे है—“जावो ज़ाख और रहो साख ।” इज्जतको गेनई सगला भलावाना है । इज्जत नई बचेगी तो ये बखत माटीमें मिल जावागा ।

गोपीराम—(धीरज बन्धातो हुयो) घबडाओ मतना । सा ठीक ही ज्यायगी (रामप्रसादने) रामप्रसाद । पचास हजार रुपया भोलारामजोने देदे, भोलाराम भीवराज के पेचा खाति नाव माड दे ।

रामप्रसाद—(पचास हजार का नोट तिजुरीसे निकाल कर) ये ल्यो । भोलारामजी ।

भोलाराम—(रुपया लेकर) आच्छी तो मे जाऊँ हुँ

हुन्डीवाला बैठ्या हैं जिकी जंघने भुगताण देकर नक़ी कर ।

गोपीराम—हा । जावो । (भोलारास जावे है)

(इतणामें नैणसुख मंगतूराम आवे है)

नैणसुख, मंगतूराम—(हाथ कठाकर) बाबुजी । जय गोपालजीकी ।

गोपीराम—जयगोपाल । आभो, आज जुगल जोड़ी कैया आई ?

नैणसुख, मंगतूराम—के पाया हा । इव तो म्हाने बी कोई भलेरीसो रजगार बतावो । म्हेतो याई बाट, देखै हा जिकी कालो माई सुणई लई ।

गोपीराम—धाने तो जरूरई बतावागा । एक काम करो हुन्डियाकी दलाली करण लाग ज्यावो ।

नैणसुख, मंगतूराम—भोत ठीक है । आजसेई सही । बोलो । पैना पोत धे के बतावोगा ?

गोपीराम—जावो दो लाखकी कलकत्ती (सुइती हुन्डी कलकत्ताकी) ठीक जचाई करकर, लियावो भावमें कसर नई लाग ज्याय ।

नैणसुख, मंगतूराम—ठीक है । भाव कानी सें तो धे सी हाथकी सोड में सोवो । (दोनों जावे है)

(इतणामें रंगलाल आवे है)

गोपीराम—(खच्चो होकर रंगलालने) आवो, सेठ साब । जयगोपालजीकी, आज कैया पधाखा ?

रगलाल—जयगोपालजीकी । क्या का सेठ साव, भार्पा तो भाई हा । सब एकई माया है ।

गोपीराम—या तो क्यु कबो । म्हारे तो थे सेठई हो । थारो गुण थोडोई भूला हा । साची पूछो तो थे म्हाने के जाणें था । पण कितणी मातबरी करे था । थे इतणुं म्हारो नई देतातो अँ कलकत्तामें म्हारा पगई कोनी जमता । सेठ साव । थारो गुण म्हे भूलणैका नई हा । गुणने खराब आदमी होय जिका भूलया करें है ।'

रगलाल—बात तो यार्द है । कही बी'ती है—

“हरदी जरदी नां तजे, खटरस तजे न भाम ।

सीलवत गुण ना तजे, गण की तजे गुलाम ॥”

गोपीराम—आजकाल आपके रुजगार बाडीका के हाल हैं ?

रगलाल—फिकाइ हाल है । इंदर में म्हे रुपयो भीत खो दियो ।

गोपीराम—क्यामें खो दियो ?

रगलाल—एक आदमीका फेरमें आगया । वो सोनाका म्हुल दिखाकर पेन्ता तो म्हारा नाम सें रुब सोदो कर लियो, पीछे जद डयादा घाटो होगयो जणा नटकर नाकै होगयो ।

गोपीराम—थे इतणा हुंसियार समजदार होकर कैथा ज'कै फेरमें आगया ?

रगलाल—फेरमें के आगया रुपी के बस होगया । कछा बी तो करें है—

“जैसी हो होतव्यता, वैसी ऊपजे बुद्ध ।

होनहार हृदय बसै, बिसर जात सब सुख ॥”

गोपीराम—या ठीक है। मेरे साहू कोई काम होयतो कै दियो। सकोच मतनां करियो।

रंगलाल—रुपया दो लाख की मदतकी दरकार है।

गोपीराम—रुपया तो थाराई है लेज्यावो। (रामप्रसाद ने) रंगलालजीने दो लाख रुपया दे दे। रंगलाल राम गोपाल के नावें माड दे।

रामप्रसाद—(दो लाखका सोट तिल्लुरी, सें निकाल कर) रंगलालजी साब,, ल्यो !

रंगलाल—(रुपया लेकर) गोपीरामजी इव तो मैं चालु हु (मनमें) गुण मानणु नाम अँ को है। साचो मदत अँ ने कइया करे है। ऊपर सें कइई बोले भीतरमें कइई घाटा घडियो राखे आत्माकी चोरी राखकर आत्माके बिह्व बात करै जिका बी कोई आदमी है ? वे बिना सींग पूछका पसु है। इसा आदमियाने चोरावे ले ज्याकर गाछें।

गोपीराम—मैं बी घरा जाऊ गो, चालो सागैई चाला।

(दोनों जावे है)

दुसराक समाप्त ।

अंक तीसरा ।

* प्रवेश पैलो *

ठिकाणो घमडीलाल गिरधारीलालकी दुकान ।

(घमडीलाल बैठ्यो है)

घमडीलाल—(मनमें) साची बात है—“माया मद मो
मह, और मह सब रह ।” माया पाकर घमंड नई कख्यो
तो जगमें आकर के कख्यो । लोग पीमो पीमो करता,
धातियो माई धातियो माई करता डोले है, ये निरा काठका
जल्लू है । अठे तो जठीने निजर फेरांदा, पीमोई पीसो
नीजर आवे है । ये बखत तो बिटा पीतांकी धी खुब
रुहर है । रुपया एक किरोड साचा है । पीछे और
रुपयाने होता के वार लागे है । रुपया तो बात की बात
में पैदा हो ज्यार है । मन्ने तो अण सगा सोयाकी, भाई
बन्दाकी, गरीबडियांकी लीला देखकर पूरी हांसी आवे है ।
मेरा मटा मन्ने किरोडपती समज कर, मेरो इहारो अटकलने,
रुपया लीणने मु लीपकाता चल्या आवे है । मैं अण मूरखाने
के ममलु हू । मन्ने अणकी के गरज है । मैं निगा

ऊठाकर जूँ कांती देखुई कोनी । दलिदरियाने देखकर
तो मयै सरमई भोत आवे, मेरे कन्ने कमाल को के काम ।
पण मैझी जबरुहु । मेरे कन्ने ये लोग आवे जणा इसी
इसी खुनस काडण लाग ज्याऊ, जिको अण को खायो पियो
सो बल ज्यावे । आगेने आपणे, कन्ने आवणई जुगता कोनी
रवे ।

(इतणामें रंगलाल आवे है)

घमडीलाल—क्यु । कैया आया हो ? थारी दुकान
पर आज काम कोनी के ?

रंगलाल—(मुलककर) थारा दरशण करणने आगया ।

घमडीलाल—(आपरवाईसें) दरशण करणा हो तो
मन्दर में जावो ।

रंगलाल—(बात टालकर) आजकाल के हाल चाल है ?

घमडीलाल—(त्योरी चढाकर) म्हारा हाल चाल पूछणै
की थाने के दरकार है ?

रंगलाल—आपसरै में पूछणै को क्यु दोस थोडोई है ।

घमडीलाल—ये थारो कवोनां । क्यु काम हो, कै द्यो ।

रंगलाल—काम तो यो है— ये बडा आदमी हो सो दया
मया राख्या करो । सुण्यो है क ना—

“दया धर्म को मूल है, पाप मूल अभिमान ।

तुलसी दया न छोडिये, जब लग घटमें प्राण ॥”

घमडीलाल—रेणदो, म्हे सा आणा हा ।

रगनान—खेर ! कोई चोखोमो रुजगार होयतो नाने
बी बतावो, ज्युं दो पोसा ठाना वेव्या मिल ज्याय । कोई
नयो काम करोतो करव्यो ?

घमडोलान—(भु भुलाकर) कोई नयो काम नई करणु
है । एक जणाके सागेतो वेपार कय्योयो जिको रुपया दश
हजार बाकी रगया, तकादो करता २ जमादारका गोडामे
पाणी पड गयो, जणा हारकर इव नालस करणी पडो है ।

रगनान—जणा के आट ह । वा कछा करे है—

‘नालस करो तकादो कुव्यो, घर घर दिखणा बाटो ।

बडा भाग से’ रुपया पावो, नई धुक नगाकर घाटो ॥”

घमडीनान—बस, रेण द्यो बतोलवाजी ने । चोटी
मे लाया बेरो पटे । चन्हा आया है अठे ठालामुना छाती
छीलणने ।

रगनान—(मनमें) अँ का मनमें तो घमडको ठिकाणुई
कोनो रिह्यो । मैं तो सौदो बोलु ह, यो मेरो मटो टेडो टेडो
ई बोल्या जाय है । देखो, गोपीराम बी आदमी ई है ।
गयोडा आदमी से कितणी हलोमो से बतलावे है, कितणु
मान तान राखे है, कितण रुहारो देवे है । अँको मिजाज
तो आकास मे ई चढ गयो । आपणी इव अँको के गरज है,
किरोडपती है तो आपका घरको है । अँसे दो बात तो
जरूर करणी चाये । अँको आख आखी तरा खोल दीणी

जठाकर लंघ कानी देखुई कोनी । दलिदरियाने देख
तो मसै सरमई भीत आवे, मेरे कन्ने कगाल की के का
पण मैझी जबरोहु । मेरे कन्ने ये लोग आवे जणा
इसी खुनस काडण लाग ज्याऊ, जिको अण को खायो मि
सो बल ज्यावे । आगेने आपणें कन्ने आवणई जुगता को
रवें ।

(इतणामें रंगलाल आवे है)

घमंडीनाल—क्यु । कैया आया हो ? थारी, दुख
पर आज काम कोनी के ?

रंगलाल—(मुनककर) थारा दरशण करणने आगया

घमंडीनाल—(लापरवाईसे) दरशण करणा हो
मन्दर में जावो ।

रंगलाल—(बात टालकर) आजकाल के हाल चाल है

घमंडीनाल—(लोरी चढाकर) म्हारा हाल चाल पूछ
की थाने के दरकार है ?

रंगलाल—आपसरी में पूछण की क्यु दोस थोडोई है ।

घमंडीनाल—ये थारी कवीना । क्यु काम हो, कै थो

रंगलाल—काम तो थो है— ये बडा आदमी हो सो द
मया राख्या करो । सुण्यो है क ना—

“दया धर्म की मूल है, पाप मूल अभिमान ।

तुलसी दया न छोडिये, जब मग घटमें प्राण ॥”

घमंडीनाल—रेण्दो, भे सा जाणा जा ।

रगलाल—खैर ! कोई चीखोसो रुजगार होयतो म्हाने बी बतावो, ज्यु दो पोसा ठाला वेळ्या मिल ज्याय । कोई नयो काम करोतो करल्यो ? ६

घमडोलाल—(झु झुलाकर) कोई नयो काम नई करणु है । एक जणाके सागेतो बेवार कखोयो जिको रुपया दश हजार बाकी रेगया, तकादो करता २ जमादारका गोडामे पाणी पड गयो, जणा हारकर इव नालम कग्णी पडो है ।

रगलाल—जणा के आट है । वा कछ्छां करे है—

‘ नालस करो तकादो छुयो, घर पर दिक्कणा बाटो ।

बडा भाग से रुपया पावो, नई थुक लगाकर चाटो ॥”

घमडोलाल—बस, रेण दो बतोलवाजी ने । चीटी मे लाग्या बेरो पटे । चन्हा आया है अठे ठालाभूला छाती छीलणने ।

रगलाल—(मनमें) अँका मनमें तो घमडकी ठिकाणुई कोनी रिह्यो । मैं तो सौदो बोलु हु, यो मेरो मटो टेडो टेडो ई बोल्या जाय ई । देखो, गोपीराम बी आदमी ई है । गयोडा आदमी से कितणी हलोमा से बतलावे है, कितणु मान तान राखे है, कितणु रुहारो देवे है । अँको मिजाज तो आकास मे इ चढ गयो । आपणें इव अँको के गरज है, किरोडपती है तो आपका घरको है । अँसें दो बात तो जरूर करणीं चाये । अँको आख आखी तरा खोल दी

ऊठाकर रुण कानी देखुई कोनी । दलिदरियाने देखकर
तो मन्ने सरमई भोत आवे, मेरे कन्ने कगाल की के काम ।
पण मैं बी जवरोहुं । मेरे कन्ने ये लोग आवे जणा इसी
इसी खुनस काडण लाग ज्याऊ, निको अण की छायो पियो
सो बल ज्यावे । आगेने आपणे कन्ने आवणई जुगता कोनी
रवें ।

(इतणामें रंगलाल आवे है)

घमडीलाल—क्यु । कैया आया हो ? थारी दुकान
पर आज काम कोनी के ?

रंगलाल—(मुलककर) थारा दरअण करणने आगया ।

घमडीलाल—(लापरवाईसे) दरअण करणा हो
मन्दर में जावो ।

रंगलाल—(बात टालकर) आजकाल के

घमडीलाल—(त्वोरी चढाकर) भारा
कौ थाने के दरकार है ?

रंगलाल—आपसरी में पूछण को क्यु

घमडीलाल—ये थारी कवोनां । क्यु काम

रंगलाल—काम तो यो है— ये बडा

मया राख्या करो । सुण्यो है क ना—

“दया धर्म को मूल है, पाप

तुलसी दया न छोडि

घमडीलाल—रेणयो

रगलाल—खेर । कोई चौखोसो रुजगार होयतो म्हाने
बी बतावो, ज्यु दो पौमा ठाना बेव्या भिन ज्याय । कोई
नयो काम करोतो करव्यो ?

घमडौलाल—(झु झुलाकर) कोई नयो काम नई करणु
है । एक जणाके सागेतो वेपार कखोथो जिको रुपया दश
हजार बाकी रेगया, तकादो करता २ जमादारका गोडामें
पाणी पड गयो, जणा हारकर इव नालस करणी पडो है ।

रगलाल—जणा के आट है । वा कछा करे है—

‘नालस करो तकादो छुव्यो, घर घर दिक्कणा बाटो ।

बडा भाग से रुपया पावो, नई थुक नगाकर चाटो ॥”

घमडौलाल—बस, रेण दो बतौलावाजी ने । चोटी
में लाग्या बेरो पटे । चन्हा आया है अठे ठालामूला छातो
छीलणने ।

रगलाल—(मनमें) अँका मनमें तो घमडको ठिकानुई
कोनो रिह्यो । में तो सीदो बोरु हु, यो मेरो मटो टेडो टेडो
ई बीन्धा जाय है । देखो, गोपीराम बी आदमी ई है ।
गयोडा आदमी से कितणीं जल्तोसो से बतलावे है, कितण
मान तान राखे है, कितण सहारो देवे है । अँको मिजाज
तो आकास में इ चढ गयो । आपणें इव अँको के गरज है,
किरोडपती है तो आपका घरको है । अँसे दो बात तो
जरूर करणी चाये । अँको आख आखो तरा खोल दीणी

जठाकर छ'ण कानी देखुई कोनी । दन्दिदरियाने देखकर
तो मयै सरमई भोत आवे, मेरे कचे कगाल को के काम ।
पण मै'वी जवरोहु' । मेरे कचे ये लोग आवे जणा इसी
इसी खुनस काडण लाग व्याऊ, निको अ'ण को छायो पियो
सो बल व्यावे । आगेने आपणे कचे आवणई जुगता कोनी
रवे ।

(इतणामें रंगलाल आवे है)

घमडीलाल—क्युं । कैया आया हो ? थारी दुकान
पर आज काम कोनी के ?

रंगलाल—(मुनककर) थारा दरशण करणने आगया ।

घमडीलाल—(लापरवाइसे) दरशण करणां हो, तो
मन्दर में जावो ।

रंगलाल—(बात टालकर) आजकाल के हाल चाल हैं ?

घमडीलाल—(ल्योरी चढाकर) म्हारा हाल चाल पूछण
कौ थाने के दरकार है ?

रंगलाल—आपसरी में पूछणै को क्यु दोस थोडोई है ।

घमडीलाल—थे थारी कवोना । क्यु काम हो, कै थो ।

रंगलाल—काम तो यो है— थे बडा आदमी हो सो दया
मया राख्या करो । सुण्यो है क ना—

“दया धर्म को मूल है, पाप मूल अभिमान ।

तुलसी दया न छोड़िये, जब लग घटमें प्राण ॥”

— जो, म्हे सा जाना हां ।

चाये (ऊपरसे) सेठजी । कैया नाक चढाकर बात करो हो ?

धमडोलाल—अरे मे के बात है । नाक तो झड़ारो है ।

बढावागा, चाये ऊतारौंगा ।

रंगलाल—थारे बडा आदमिया लायक, ये बाता नई है ।

कहीबी तो है—

‘बडा बडाई ना तजै, बडा न बोलै बोल ।

होरा मुखसे ना कहै, लाख हमारा मोल ॥”

धमडोलाल—इब देखा भाने कुण छोटी आदमी बणावे है ।

रंगलाल—छोटा बडा तो करमा से होय है । पण

थोडासा जीवणके ताई इतण गुमान करण चोखो कीनी ।

धमडोलाल—इहे गुमान कैके सामने करा ? झहारे

कोई बराबरियो होय जणाना । ये कै बाढीका बधुवा हो ?

रंगलाल—थारे अ बातकी गुमान होयगो । इहेतो

बणियाणो जायोडाने सबने एक समजा हा, पण यो बेरो कीनो

पव्यो—ये बडा आदमी क्या पर इतणा इतरा, रिह्या हो ?

जाणा हा आजताई या लिहमी कोईके सागे नई गई है ।

पण था लोगक सागे जरूर जायगी ।

धमडोलाल—जणा दुनिया में बडा आदमी युई बणाया

गया है ?

रंगलाल—क्यु । बडा आदमियाके सींग पृक होय है

के ? छोटा बडा में के फरक है ? इतण ई फरक है ना—

बडा आदमीका टाग में ज्यादा आदमी चम्हा जावे है, छोटा

आदमीका दाग में कमती चल्ता ज्योति है । वस, धोरती वसु
फरक है ई कोनी ।

घमडीलाल—(खिजकर) रैणथो, वस म्हारे आगे क्यु
ज्यादा परमोद लगावो हो । सा जाणा हा ।

रगलाल—कै चुल्हाकी राख जाणु हो । जाणता तो इत-
णी बातई कै हो । ये तो थारा मनमें कोरा रामजी हो
रिह्या हो ।

घमडीलाल—(जोरसे) अच्छातो, थारे कन्ने क्यु मागण
जाया तो मत दियो ।

रगलाल—अँ बातको कै गूमान करो हो । अँयाई
करोगा तो मागण जोगावी हो ज्यायोगा । मागणको दिन
बो भगवान जलदीई दिख्हा देवेगो । ससार में गरब गूमान
कोईको नई रिह्यो है । अच्छा २ को गरब गल गयो है ।
जरा कान खोलकर सुणों—

जग में गरब किया मोई हाया ।

गरब कियो रतनागर सागर, जल खारा कर डाय्या ।

गरब कियो लकापति रावण, टुक टुक कर डाय्या ॥

गरब कियो उणचक्रवे चक्रवो, रंग बिछोवा कर डाय्या ।

गरब कियो वा वनकी चिरमो, नूडा कारा कर डाय्या ॥

घमडीलाल—देखाजी । मरगया गरब गालवा वेना ।
न्हाने मागणका दिन भगवान दिख्हा देवेगो, अँ बातकी खबर
थारे कन्ने आगई होगो । आया हैं बात बगवणने । कहता

सरम कोनी आई—“मगती ओर भीखी खाई कोनी।”

रंगलाल—देखो। गैलने तो थारे सें क्यु मदत मिलो कोनो। आगेने मिलणै की म्हाने आसा कोनी। क्यु धोती मा से निकल २ पडो हो। मन्त्रे थारी परवा के है ?

घमडोलाल—परवा नई है तो म्हारे कन्ने के भगव मारण ने आया हो। देख्यो डोल—“गलियारा में टट्टी बैठे, डलटो घूरिया काडै।”

रंगलाल—बस। थारा बी बडा आदमियाका डोल देख लिया। करदियो मु तूतई सो।

घमडोलाल—आच्छो के आट है, डोल देख लियो तो, आगेने म्हारी गहीमे आवोगा तो धुल खावोगा।

रंगलाल—थारे कन्ने कुण आवे है। ये के चीज हो, क्याकै लागो हो ? गही को घेमड दिखावो हो। ठेर ज्यावो, गही में तो धुलई खाणने मिलसी।

घमडोलाल—आच्छो। इब भोत होगई, चुपचाप चल्या जावो। अण बातमि के खावो हो ?

रंगलाल—(ऊठकर) या थो। म्हे तो चाह्या। पण अ बातको परचो थाने एक महीना के भोतर नई दिखा देवा, तो असल बणियाणी के कोनी जाया (मनमे) अ बखत गोपीराम की भोत सावल पड रही है। बीस तीस लाख तो होई गया है। अ याई सावल पडतो रवेगो तो दश बीस दिनमे बी बी किरोडपती हो ज्यायगो। पीछे से

पूतने चोखी तरा समज लेवागा जती मा काडकर सीदो लग कर देवागा । (ऊपरसे) कोरो गद्दोका घमड मे बाको हो रिछो है । रुहे दिखा देवागा या गद्दो फद्दो ऊडती फिरसी ।

घमडीलाल—(आख लाल करकर) बस, चल 'दे । के सेखो लगावे है ।

रगलाल—(चाल पडै है ओर मनमें सोचे है) पेनाई जाणै था यो आटमी मछा खराब है । ओकी आखमें सील नई है । मायाका मदमें चुर हो रिछो है । सो कदे ना कदे लडाई जरूर होगी, बाको बा हुई । आदमीने इसी जगा नइ जाणु चाये अठे आव बैठ ओर प्रेम आगली नई करे । महाराज तुलसीदामजी बी तो कही है—

“आयाको आदर नही, नही नैनमें नेह ।

तुलसी बड़ा न जाईये, कवन बरसी मेह ॥”

आदमीने आव बैठ ओर प्रेमकाली जघाई जाणु चाये । जेया कही है—

“आयाको आदर करे, चलत निवावे सोम ।

तुलसी वा घर जाईये, मिलिये विश्वा बीस ॥”

(सोचतो २ रगलाल चल्यो जावे है)

● प्रवेश दूसरो ●

ठिकाणो गोपीराम मुरलीधर को भकान ।

(गोपीराम मोजोराम बैठक में बैठा है)

गोपीराम—बोन्नो । मोजीरामजो भहाराज ?

मोजीराम—बस, आनन्द होगया । आपा चावे था जिकीई बात होगई । देखियो, क ई सेवाराम का बेटा आकर धारी नोकरो करण लाग गया है । पीसाको परताप इसोई है । मेरा मटा मुडासें कोनी बोल्या करता, जिको इव आप्येई बाबुजो २ कवे है ।

गोपीराम—कोई बात ना । वा कह्या करे है—“करंगो सो पावेगो, बावेगो सो लुणगे गो ।” आपणु के लियो ।

मोजीराम—लोणपर बात थोडीई है । दुनियाका धाराको बात कही है ।

गोपीराम—सभार समुद्र है । अमे के ने बेरो केया २ का जोव भया पद्या हैं । कपाली २ बुझी है । बोन्नो । धारा के हाल चाल है ?

मोजीराम—भहारा हाल के पूछो हो ? रोजीना दुदिया भाग छणे है । दुसमनकी छातो पर मेरो रगडो लागे है ।

गोपीराम—देखियो । यो रगडो लगावता लगावता, कदे

दूसरी रगड़ो मत लगावण लाग ज्यायो । यो कलकत्तो है,
पठेकी हवा भोत जनटी लाग्या करे है ।

मोजीराम—म्हारै तो हवा जलम ताई थै भग भवानी
तो लागो हौ, जिको थै के म्यामने दूसरी हवा असर कोनी
करै । एण अठे बडा वायु कुहाण लाग ज्यावै जिका थै
मेरवो चकरमें भोत जलदो फस ज्याया करे है । सोना-
गहोको हवा खाया बिना ऊणके पितरा पाणो कोन्या रसया
करे है । सो धे कठ लगोटी मत भडका आयो ।

गोपीराम—म्हागे के अमजो हा । रुहे लगोटी का
साधा हा

(इतणामें नेणसुख मंगतूराम आवे हैं)

नेणसुख, मंगतूराम—(गोपीरामने) जयगोपालजीकी !
बाबुसाब ।

गोपीराम—जयगोपाल ।

मोजीराम—बोली, नेणसुखजी ! आजकाम्म के करो हो ?

नेणसुख—दमाली करा हा ।

मोजीराम—आसामी खुब पटे है ना ?

नेणसुख—रुहे तो दमाल भाई हा, म्हारै तो ये बी
आसामीई हो । देख ल्यो, ये कितणा क पटी हो ।

मोजीराम—(सुनककर) घोखो २ माल हाथमें राख्या
करो । घणोंइ आसामी पट ज्यायगो । आजकाम्मका बाबु
लोगाने पटाणै को यो भोत सीदो रस्सो है ।

मगतूराम—म्हाराज ! यो काम थारें ताई छोड राख्यो है, क्यु को अँका रास्ता थानि चोखा मालूम है । ये आज काल ठाना बी हो, सो या दलानो ये कग्या करो । थारें पेदा खूब हो ज्यायगी ।

मोजीराम—हा । हा ॥ समज गया । थारें से यो काम कोनो छोणै मजै । क्यु को ये काम राडिया डाडिया का नई है । ये काम तो लुगाईवानाका है । ओर कठे मिसल नई बठे तो घरमें त्याग मिले, सो यो काम तो नैणसुखजोई लायक है । ये तो अणको गेल २ बाबुपटाणें में रिह्या करो ।

मगतूराम—थे या, मनमें क्यु राखो । थे बी देशसे मिश्राणोजोने बुला ह्यो । पीछे बरणी पाठ को धर्णाई लम्बर नाग ज्यायगो मत्तेई चीज घरा पुचवो करेंगी ।

मोजीराम—मिश्राणी तो या लीगाके लेखे तुलसी पौपल की पेड है ।

मगतूराम—जणके आट है । सोचणें को आराम हो ज्यायगो ।

मोजीराम—बाहली, टपोनसखजो । आखी बिन्दी चाक के मान लागी । म करे, लगुरी माकडको सो आख लिया बुडा बान्दरा की सी ।

(इतणामें रगलाल आवे है),

गोपीराम—(सगलाने) बस, चुप रवो । रगलालजी आवे है (सब जणा चुप हो ज्यावे है) ।

रंगलाल—आज के हो रिहो है ?

गोपीराम—(मुलककर) आवो । क्युई हो रिहो ना, बैठ्या हा ।

रंगलाल—अँ दस पाच दिनमे क्य, ओर बी सावन पड़ी के ?

गोपीराम—हा । रुपया पचास चालीस लाख मिल गया है ।

रंगलाल—बस तो, रहे बी यार्ड चावे था । इव तो ऊ ने घणु ई समज लेवागा ।

गोपीराम—या के बात है ? या क्या पर कहौ ?

रंगलाल—या बी एक बात है । अठे आपा सगला जणा घरी घरका बैठ्या हा ना ?

गोपीराम—हा ! सगला घरकाई घरका है । बारको कोई कीनी ।

रंगलाल—अँ मेरा मटा घमंडीलाल गिरधारीलाल वाला के भोत दिमाग होगयो । आज खुशीई सुद भाव ऊ की गही में चल्या गया था, सो मारे मिजज के टेडो होगयो, ऊट-पटांग बकण लाग गयो । सेसर्म ऊकी म्हारी पूरी सारी तकरार होगई ।

मोजीराम—ऊकी नामई घमंडीलाल है, जणा आपका नामकी लाज तो राखीई चावै । नामको असर क्यु बिना कैया रवै ।

गोपीराम—या ऊको भूल है । ईश्वर को नीचे बसकर घमंड नई करणु चाये । आपसरीमें भेद भाव नई राखणु चाये । सब एकई माया है ।

रंगलाल—वो तो, या बात और कवे है, मैं कौं कौ म्यामने गूमान करू । मन्ने मेरो बराबर को कोई दोखेई कीनो ।

गोपीराम—दुनिया में एक से एक बढकर पढा है । धरती पर इब वो हिसा २ मिनख पढा है, जण को आई गई को छेई कीनो है ।

रंगलाल—ऊ ण तो आपके मनमें सगली दुनियां नबीजी समज राखी है ।

गोपीराम—ऊंके समज्या के होय । पण या बतावो आपण के मुतबल है ?

रंगलाल—एकबर ऊने कोई ना कोई सुरत सें जरू नीचो दिखावणु चाये, कोई बी काम में ऊने ऊयलकर म्दो पकटणु चाये ।

गोपीराम—जणा एक काम करो (नेणसुख, मंगतूराम ने) बोली, क्य काम है के ?

नेणसुख, मंगतूराम—(आपसरीमें धीरासी) इब ये प्रागला आपको श्रीले की बात करेगा, सो बैठ्या रहणु ठोक नई (ऊपरसे) काम तो क्य ई ना जो । वो कलकत्तो तो लिखा जिगो है । इब और लेवोगा के ?

गोपीराम—ना । ओर कोनी लीणु ।

नैणसुख, मगतूराम—ठीक है (दोनु जावें है)

रंगलाल—हा ! कुणसो काम करा ?

गोपीराम—ऊणा क अँ बखत रुई भोत माथे है मन्दा २ भावको बेच्योडी है । अँ बखत ऊर्म पूरो घाटो है सो आपणै रुईको खेलो कर गेरो । जितणी रुई है सो सगल खरीद ह्यो । पीछे देखियो नोग ऊसे सु माग्या दाम लेवेंगा जणा आपैई जीव निकाल देवेंगे ।

रंगलाल—भोत ठीक । या जुगती तो भोतई साचै बताई । अँ म ऊँकी काच आपई निकल पड़ेगी ।

गोपीराम—थारा, रहारा, भोलारामजी का, तीनवाका नाम सँ खरीद कर ह्यो, ओर बी बणै जठे ताई लोगाने सामिल कर ह्यो ।

रंगलाल—ठीक है, अँयाई करागा । देखियो हब के के र ग खिले ।

(इतणामें भोलाराम आवें है)

गोपीराम—वे ह्यो ! भोलारामजी बी आगया है । अ एने बी कौदो ।

भोलाराम—खोनी १ के डुकम है ?

रंगलाल—आजकाल घमडीलाल को दिमाग भोत सुज गयो है । सो ऊकी सोई कतारणों चाये । जैकी उपाय या सोची गई है कि, अँ बखत ऊँक रुई भोत माथे है ।

गोपीराम—या ऊको भूल है। ईश्वर को नीचे बसकर भजन नई करणु चाये। आपसरीमें भेद भाव नई राखणु चाये। सब एकई माया है।

रंगलाल—थो तो, या बात ओर कवे है, मैं कै कै ध्यामन भूसाव कह। मने मेरो बराबर को कोई दोखई कोनी।

गोपीराम—दुनियां में एक से एक बढकर पढा है। धरती पर ५४ थो हिंसा २ भिनख पढा है, जण को आई गई को छेई कोनी है।

रंगलाल—ऊण तो आपके मनमें सगली दुनियाने नवीजी भजन राखो है।

गोपीराम—ऊको समझ्या के होय। पण या बताव आपण के मुताबल है ?

रंगलाल—एकधर ऊने कोई ना कोई सुरत से जब नीची दिखावणु चाये, कोई थो काम में ऊने जधलकर मदे पकटणु चाये।

गोपीराम—जणा एक काम करो (नेणसुख, मगतूराम ने) कोनी, क्य काम है के ?

नेणसुख, मगतूराम—(आपसरीमें धीरासो) इव से आगत आपको बोले की बात करेगा, सो बैठ्या रहणु ठोक न (...) तो घड़ नां जो ! थो कलकत्तो तो नि (...) ओर नेवोगा के ?

ॐ प्रवेश तीसरो *

ठिकाणो घमडोलाल गिरधारीलालको दुकान ।

(घमडोलाल बैठगो है)

घमडोलाल—(मनमें) गरब गुमान बी तो दुनियामें कोई बात कै ताई बणायो गयो है । गरब गुमान सेई बडा प्रादमी को बडप्पण सो मालुम देवे है । लोग मेरी बढी हुई आबरुने देखकर तथा मेरो ठाठ बाट, रोव दीव देखकर, माई मांय जलया जावे है । सो भलाई भैसें बी बेसी जलो । कछा करे है—“कुतिया पुछ क्युं हिलाती है, इसकी आत् जलती है ।” सुणा हां लैर सें लोग मेरी खोटी खरी बी भीत करे है, सो कोई बात ना, हाथियाकी लैर कुत्ता युई घूसबो करे है । मु पर कछा तो छठो को दूद निकलवालयुं । (ऊपरसे) मुनीमजी ! देख्यो क ।

मोतीलाल—फरमावो । के ?

घमडोलाल—देख्यो कीन्दा । रंगनो कितणी २ बडकर करे थी । छोटासा मुसे बडी सी बात । इव वो रूहारी

सो रुई सगली आपणा तीनु फारमा के नाम से ले लीणीं
 और ऊंने चाये जणा ऊसें मूमाग्या दाम लीणां चाये । सो
 आपई ठीलो हो ज्यायगो ।

भोलाराम—ठीक है । इसा में तो इसीई छोणीं चाये ।
 मन्ने तो आपलोगा का काम में कोई उजर है नई ।

गोपीराम—वसतो, जावो । इव देरी को काम नई है ।
 चुपचाप जाकर नितणु इष्टाक रुईको होय खरीद लो । कोई
 बी आदमीने बेरो नई पटण पावे ।

रंगलाल, भोलाराम—भोत ठोक है । 'जावा हा, भैयाई
 करागा । इव न्हारे के ठोल है (दोनीं जावे है)

गोपीराम—(मोजीरामने) बोलो । आज थाने भूख
 कोनी लागी के ?

मोजीराम—भूखको वारण्ट आया तो एक घन्टा पूरी
 होगई घण क्या कै बटका भरण लाग ज्यावां ? भीतर की
 कडाई गरम होकर, स्टीम एक दम तेज हो रिश्चो है ।
 सो घरा चालो तो अने ठडों करा ।

गोपीराम—(मुलककर) चालो । आत्मा परमात्मा है
 अने बी कष्ट दीणु ठोक नई

(दोनु जावे है)

बात श्री से जरूर करणी चाये । श्रीने मसकरिया में खुब
ऊडावण चाये । (भुगतान लेकर) सेठजी । पूजडो की के
बात कही ? सुणी कोनी के ? गावमें रवो हो क ऊजाड
में ? आजकाल म्हारै सेठा कबे इतणौं रकम होगई है कि,
याने मोल लेकर छोड दी ।

घमडोलाल—जाणा हा । काल ताई तो वो
मुटिया मजुरो करतो, आज म्हाने मोल लीणवानो
होगयो ।

मोजीराम—सेठा की सकल तो देखो, जाण्य गोबर पर
पाणी बरस गयो होय । थारै बडका के पीर थारै तो लिछमी
जो सागे जलम्याई होगी ।

घमडोलाल—म्हारी क्यु बात करो हो । म्हाराज ।
सुलफा गाजाको दम लगाई है । बगीचियांको चवा छाई है ।
याने के बेरो आलको के भाय है ।

मोजीराम—ओहो ! सगलो बात जाणने को ठेको थारैई
नाम होगयो दीखे है ।

मोतीनाल—(मोजीरामने) म्हाराल । क्यु बक बाद
लगावो हो । थारै गेले क्यु जायो नां ?

मोजीराम—गेले सो जावाईगा । अठे बैठकर म्हाने के
सेतरपान धोखल है ।

घमंडीलाल—नई । आजकाल वो क्यु बड बोली गयो है । ऊ कीसी अकल तो मे चंटी में लिया डोलु लु

सोतीखान—अ बात ने वो के जाणे । ये पगासे लगायो, जिकी ऊ से हाथा से तो खोलौई कोनी ज धो मुरख है, गवार हैं । गवार होय जिका अयाई व्याया करें है । इहाराज तुलसीदासजी बी तो कही है

“तुलसी बुरा न मानिये, जो गवार काइ व्याय ।

जैसे घरका नरदहा, भला बुरा बह व्याय ॥”

(इतनामें मोजोराम आवे है)

घमंडीलाल—म्हाराज, कैया आयो है ?

मोजीराम—सेठ । भुगताण लीणने आया हा ।

घमंडीलाल—(नाड हलाकर) आजकाल तो ते बाणिया कवे वो पूजडी होगई ।

मोजीराम—(मनमें) यो तो आदमी साच्याई घम हैं । वा कछा करें है—“बोल्होर लायो ।” अकी तो वो मेंई वारा आना है । रगलालजी साची कवे था न्हा सु आदमी है, सो मूरख के स्यामने बकबाद करणो ठीक चुप रेणु ठीक है । कछा करें है—

“मूरख को मुख बखई, निकसत बचन बिहग ।

ताकी धौपध मौन है, बिप नही व्यापत अग ॥”

पण या बात सो ठीक नई ।, चुप रिह्या आपणु आपो

वात सँ सँ जरूर करणी चाये । सँने मसकरिया में खुब छडावणु चाये । (भुगतान लेकर) सेठजी । पूजडौ की के बात कही ? सुणी कोनी के ? गावमें रवी हो क ऊजाड में ? आजकाल म्हारै सेठा कचे इतणों रकम होगई है कि, याने मोल लेकर छोड दी ।

घमडीलाल—जाणा हा । काल ताई तो वो मुटिया मजुरी करतो, आज म्हाने मोल लीणवानो होगयो ।

मोजीराम—सेठा की सकल तो देखो, जाण्यु गोबर पर पांणों बरस-गयो होय । थारै बडका के और थारै तो लिछमी जी सागे जलम्याई होगी ।

घमडोलाल—म्हारी क्यु बात करो हो । म्हाराज । सुलफा गाजाको दम लगाई है । बगीचियाकी हवा खाई है । याने के घरो भालको के भाव है ।

मोजीराम—ओहो ! सगलो बात जाणने को ठेको थारैई नाम होगयो दीखे है ।

मोतीलाल—(मोजीरामने) म्हाराज । क्यु बक बाद लगावी हो । थारै गेले क्यु जायो ना ?

मोजीराम—गेले तो जायार्गिगा । अठे बेंठकर म्हाने के खेतरपाल धोकणु है ।

घमडोलाल—(मोतीरामने) अणनेई के होस है । बामण प्रज्जुत होई है ।

मोजौराम—के कछण' है । अँया बोले है जाणु फुल भडता होय । सेठकी सकल तो देखो ।

मोतीलाल—(आगुकाडकर) रुहाराज । ये बख्खड बाजई हो के ? जावो चल्या जावो । बस, भोत होगई ।

मोजौराम—आप काजी हो क सुझा ?

मोतीलाल—रुहे कोई हा, थाने के सुतबल ?

मोजौराम—(ऊठकर) ल्यो । रुहाने के धारे से संगारथ कारण' है । या ल्यो रुहे तो चाल्या (दोहो बोले है)

“उल्लु मिल्या गुमस्ता, मूरख मिलगा सेठ ।

सेठाणी ऐसो मिली, छाती ठके न पेट ॥”

मोतीलाल—साची बात है—“काल बागड से ऊपजे, बुरो वामण से होय ।”

मोजौराम—वामण से साचो काम कोनी यद्यो है । नई तो भला बुरा को चोखी तरा बेरो पट ध्यातो (फुडती से चलयो जावे है)

धमडौलाल—देख्याकं । “मैंस आपका रगने तो कोनो देखे, दूसरा ने देखकर बिदकण लाग ध्यावे ।” वामणडो आपकी सकलने तो कोनी देखे, दूसराकी हासी ऊडावे है ।

मोतीलाल—वामण आगयो, नई तो अ ने मसकरियाको चोखी तरा बेरो पटा देता । पण वा कछा करें है—“गायां, भायां वामणा भाजन्ताई भला ।” वामणा से तो नाकी देण'ई है ।

घमडीनाल—(नाक चढाकर) आज तो चित्त भीत
पराव होगयो । आपणी मोटर नीचे खडोई है, चालो
मेदानकी हवा खायावा ।

मोतीनाल—आपकी मरजी । चालो भलाइ ।

(दोनों जावे है)

* प्रवेश चौथो *

ठिकाणी गोपीराम सुरली मरकी दुकान ।

(मोजीराम आवे है)

गोपीराम—(मोजीरामने) आज कठे जा आया ? कैया
बसापता किर किरा हो रिह्या है ?

मोजीराम—घमडीनाल गिरधारीनाल के भुगताण
आवण गयो थो ।

गोपीराम—आज ये भुगताण त्यावण कैया गया था ?

मोजीराम—रुपया पचास हजारको हुंड़ी थी, जणा
रामप्रसादजी मन्ने भेज दियो ।

गोपीराम—जणा तो आप आज बडे ठिकाणे जा आया !

मोजीराम—बस, बडा ठिकाणाकी बात मतना पूछो ।
पक्की मूसलचन्द है । बडो बज्जत है ।

८० / दनतौ फिरती छाया नाटक ।

गोपीराम—क्युं । थान्सें थो सुठ भेड होगई के ?

मोजीराम—कै बतावा । आताई मेरो मटो ऊठ पटांग
बात करण लाग गयो । एकवर तो मनमें आई अँका मूँडा
पर थप्पड लगावु । पण पीछे में ई हासियामें टालकर चलो
आयो ।

गोपीराम—कै आट है । सीनोलोह तातालोइने काव्या
कर है । अँको बदलो तो ऊसे घणई लेलियो जायगो ।
अँ बात कानोसे तो निस फिकर रथो ।

(इतनामें भोलाराम रगलाल आवे है)

गोपीराम—(रगलालने) आज तो मोजीरामजी थारी
उय बडा बाबुवासे भिचाया है ।

रगलाल—बसके । आज ये ऊठे कैया गया था ?

मोजीराम—मैं तो भुगतान ल्यावण गयो थो जिकी वो
ऊतको घस्यो खोटी खरौ मतेई बोचण लागगयो । मारे
गूमानकें टेडोई होगयो ।

रगलाल—जिकी तो वो आजकाल बटौकै घोडै सवार
हो रिह्यो है । आया गयासे भडवेटी लेबो करे है । नारकी-
खाल घेर राख्यो है ।

भोलाराम—अँ घमडीडाकें जदसे फारमको काम हाथमें
आयो है, जदसे बदनामी सिवाय अँ नैक नामी कदेई
कोनो नई । पैला अँको भाई दयाराम सानिक थो जिकी
एक लखरको दयालु भनोमाणस थो । गयोडाकी मोत भारो

छातरी कच्चा करतो । वो मग्घा पीके या लीला हुई है । इव
तो वा हुई—

“हंसा रहे सो जडगये, काग भये परधान ।

जायो बिप्र घर आपने, हम किसके जजमान ॥”

मोओराम—साची बात है । आज काल ऊठे दयाधर्म
को देश निकासो हो रिह्यो है । आदर मानने तिलाजली दे
राखो है । ऊठे तो वा होरही है—

“आतीको नाम सहजा, जातीको नाम गुलसफा ।”

गोपीराम—(भोलाराम रगलालने) बोलो । ये लोग के
कच्चाया ? वो काम बणा आया ना ?

रगलाल—काम बणानेमें थोड़ीई कसर राखे था । इसी
काम जडाऊ कच्चाया हा कि, पूत कइ दिना ताई याट
राखसी ।

भोलाराम—इसी गाठ लगा दई है जिको ऊ का बाप
को ई खोखोडी कोनो खुलै ।

गोपीराम—वोखो काम कयो । रुपया पीसा चाये
जितणा ओर लेख्यायो । रोकडियाने को दियो ४ सागोगा
जितणा दे देवेगी ।

रगलाल—सो के आट है । वाम चमरिह्यो है । चाये
था जिका लेवी गया हा । ओर चायेगा तो ओर लेखावागा ।
देखियो एक आट दिनमें वो थारें पगाईं आपडगी ।

गोपीराम—आपणें पगा पडनेको नै काम ५ । पगा पडनू

होय तो भोजीरामजी महारान भोजुद है ।

भोजीराम—इसा दुष्ट आदमीने मेरा पग कुवाकर किंसा पग अपवित्र करणा है ।

रंगलाल—(सुलककर) वो किसी भगी है ? बाणियु ना है ।

भोजीराम—जिको आदमी आपका मनमें आपने बडो समजे, दूसराने छोटो समजे, जिको भगीसे वो बेसी होय है ।

भोलाराम—साची बात है । श्रीमें के सक है ।

रंगलाल—(गोपीरामने) इब तो म्हे लोग जावा हा । कुबदकी जड तो रोपई दर्ई है । इब पेड होय, फल लागै जिका देखलियो । पण देखियो, फल तोडो, जणा म्हाने बी नौगा जरूर करा दियो ।

गोपीराम—जरूर । जरूर ।।

भोलाराम—(ऊठकर) अच्छा तो, जयगोपाल ।

(रंगलाल भोलाराम जावे है)

भोजीराम—मे वी मकान जाऊ हु ।

गोपीराम—व्यु । के जलदी है ?

भोजीराम—सुरलीने अजबधर, अलीपुर को धगीचो दिष्टावार ल्यावण है ।

गोपीराम—चालो, जीमण को बसत होगयो । मैकी चालस्यु ।

भोजीराम—भोत ठीक है, चालो । गाडी त्यार खडी है ।

(दोनू जावे है)

० प्रवेश पांचवो ०

ठिकाणो गोपीराम मुरलीधरको मकान ।

(गोपीराम लिहमी बैठा हैं)

गोपीराम—देखले ! विपता का दिन बी नौसर गया है ।
धीरे धीरे राखी सो खु होय है । या कछा करें हैं—

“धीरे धीरे धीरिया, धीरे सब कुछ होय ।

मानो सीचे केवडा, रिनू आया फल होय ॥”

लिहमी—रामाया कदे चोखा दिन वो आवता क कोनी
आवता । मैं तो घणोंई तकलीफ भोगी है । थारि आया
पीछे घणोंई दोरा दिन काया है । थारि आया थोडा भोत-
कोई बोलता बतलावता, आता जाता, जिका बी आवण से,
बतलावणसे, रे गया था ।

गोपीराम—बावली ! आदमी पर थोडी भोत विपत को
जहर पडगी चाये । विपतामेंई बेरो पय्या करें है कि,
हुण आपणु है और कुछ परायो है । या कछा करें हैं—

“विपत बराबर सुख नहीं, जो थोडे दिन होय ।

भाई बन्द घोर मित्रवर, परखि पडे सब कोय ॥”

लिहमी—या तो ठीक है । पण विपता तो सगली
तरिया न्याऊई है । विपताका दिन बरस बराबर होज्याया
करे है । थारि आया पीछे दिन भोत दोरा काया है । मेरो

जीवई जाणे है । ऊं बखत के जाणा के होगयो रामाखो
मन नाग्योई कोनी । रात दिन पडौ २ रास मारवो
करतौ ।

गोपीराम—या तो साची बात है । मोखार बिना
लुगाई को कैया मन लागै । पण यो पापी पेट राखै जैया
आदमो ने रेण पडे ।

लिछमो—ये देशमें इतना २ परमोद लागवे था कि,
देशमें रुजगार हो ज्याय तो, देशका आदमियाकी तबालीफ
मिट ज्याय । सो खालो कैणैकोई बात थी के ? दूसरोंनेई
सोख सिखावे था के ? ये बो वाई करे था के—“भाप गेरुजी
कातरा सारें, लोगाने परमोद सिखावें ।”

गोपीराम—के समजे है । म्हे वै आदमी नई छ, जो
कछ्हा करे है—“पर ऊपदेश कुशल बहु तेरे ।” म्हे इबी
सें देशमें इशा २ काम चलु कर दिया है जिका ठीक साथ
चल ज्यावेगा तो, देशका आदमी देशमें बंठ्या मोज करवो
करो ।

लिछमो—चोखी बात है । जिको लुगायाका धणी
परदेशमें रवे है, ऊणका पतौ देशमेंई बैण म्हाग ज्यावगा तो
वै बिचारी घणीई आसीस देवंगो ।

गोपीराम—अै मे के सक है । म्हारो समज में लुगायाने
दिसावर बुलावणु बी मछा भूल है, क्यु कि, लुगाया परदेशमें
आवताई निकम्मी हो ज्यावे है । काम काज ऊण से

जीवई जाणे है। ऊ बखत के जाणा के होगयो रामायो मन लाग्योई कोनी। रात दिन पडौ २ सास मारवो करतो।

गोपीराम—या तो साची बात है। मोखार बिना लुगाई को कैयां मन लागै। पण यो पापी पेट राखै जैया आदमो ने रेणु पडे।

लिहमो—ये देशमें इतना २ परमोद लागेवे था कि, देशमें रुजगार हो ज्याय तो, देशका आदमियाको तकलीफ मिट ज्याय। सो खालो कैणैकोई बात थी के ? दूसरोंनेई सोख सिखावे था के ? ये बो वाई करे था के—“भाप गरुजी कातरा मारें, लोगाने परमोद सिखावे।”

गोपीराम—के समजै है। म्हे वै आदमी नई छ, जो कछा करे है—“पर ऊपदेश कुशल बहु तरै।” म्हे इमी से देशमें इशा २ काम चलुकर दिया है जिका ठीक साथ चल जावेगा तो, देशका आदमी देशमेंई बैव्या, मोज मारवो करी।

लिहमो—चोखी बात है। जिको लुगायाका घणी परदेशमें रवे है, ऊणका पती देशमेंई बैल म्हाग जावेगा तो वै बिचारी घणीई आसीस देवेंगे।

गोपीराम—अँ मे के सक है। म्हागे समज में लुगायाने दिसावर बुलावणु बी महा भूल है, क्यु कि, लुगाया परदेशमें आवताई निकम्मी हो जावे है। काम काज ऊणा से नई

कराणसे मन्दागनी में पीड़ित होकर वे आपको अमूल्य जीवन नाग कर लेवें है । आवे है आराम कै ताई, जलटो को लेश हो ज्वावे है । वा हो ज्वाय है—“चोरे गयो धो छव्वे हुंणने, होगयो दुब्बे । दो गाठका ओर खो बैव्यो ।” जिकी बात होज्यावे है ।

(इतणामें मोजीराम सुरनी आवे है)

मोजीराम—(सुरनी कानी हाथ करकर) आज तो चैन भोत भोत तमाशा दिखालाया । कालीघाट, अजवधर, अलीपुरकी बगीची, दुलौचन्दकी बगीची खूब अलीतरा दिखा-न्याया हा ।

सुरनी—(नाड हलाकर) आ—हा—रे । आज तो खूब तमाशा देया । भोत मजो आयो (मोजीरामने) बाबा ! इस तो राधाकिशन बोल । (गाकर)

“दमडौवा तेल कटेइयामें, रादाकिशन झूटैयामें ।”

मोजीराम—बसके ? देखा, आगेने कै कै मागै जायगो ।

सुरनी—आच्छो २ इव कोनी कज ।

मोजीराम—(गोपीरामने) आज तो घमडौडाने गाडीमें बैव्यो देख्यो थो, जिको कुतिया मायो सो झू डो हो रिह्यो थो ।

गोपीराम—कह्या करे है—“देशवाली टारडी पूर्वोचान ।”
रन पाकर गवं करण सोख्योई है । घणुई बेरो पटज्यासी ।
जं जे तौन् फारमांकी तिगरी लागोई है । सो सगलो घमंड
कमड आपई उडज्यासी ।

मोजोराम—हा ! या बात जरूर है । गरब करे जेकी तिकबो जरूर चोडे आज्यावे है । ऊने या लीछमीजो आप्पेई छोडकर चली जावे है । कछा बी करे है—

“अभिमानिसें माया बोलो, मैं तेरासे चाली ।

खाट गूदडा सिरपर धरले, हेली करदे खाली ॥”

पण इसी करो जिको ऊंकी नाग धजासे ऊडती फिरै ।

गोपीराम—आपातो कोईको बी बुराई नई चाधा हा । पण ऊका किरतब इसाई हैं जणां के होय । ओर आपण बुरो कखोडो बी के होय है । आछी न्याऊ करणियु तो परमात्मा है । वा कछाकरे है—

“कोन किसीको मारता, कोन करे बेहाल ।

सब बातोंका करणिया, दीनानाथ दयाल ॥”

मोजोराम—सेठजी ! यो कलजुग है जिको करजुग है, “एक हाथ करो एक हाथ भोगी ।” ततकाल परचो मिले है । हलवा ओर ठाडा कखोडाको फल तो भोगणुई पडे है ।

गोपीराम—अच्छा इव तो आपणे बी चालो गंगाजीका ओर पचमुखी हनुमानजीका दरशण कखावा ।

मोजोराम—चालो ऊठीनेई बाबा भूतनाथका दरशण बी कखावागा ।

गोपीराम—ठोक है । (दोनू जावे है)

* प्रवेश छठो *

ठिक लो घमडीलाल गिरधारीलाल की दुकान ।

(घमडीलाल बैठो है)

घमडीलाल—(मनमें) देखो । करमकी बात है । क्यु रगलाल से तकरार करता ओर क्यु ये हाल होता । साची बात है—गरब गूमान आजताईं धरती, पर भगवान कोई की राख्यो नईं । देख लो, हाथ को हाथ परचो मिल गयो । धन पाकर दूसरा की आत्मा दुखाणी, दूसराने आप से छोटी समजकर घणाकी निगासे देखण, मझा मूरखा को काम है । पण धन मिलणे से मूढ घडी आवे जणा आदमी सो क्यु भूल जयावे है । ऊज्जुको माफिक सुजण से रै जयावे है (मोतीलालने) दोलो, मुनोमजो ! इव के करणी चाये ?

मोतीलाल—दा बतावा ! भोत सुखाल हो गई । मैं तो थाने पैलाई कही थी—फाटका कवाडा मत करो । फाटका का तो येई हाल है । कह्या करें है—

“करो पैटा फाटका, घरका रिछा न घाटका ।”

घमडीलाल—या तो कोई बात ना । गोपीराम फाटका से कैया किरोडपती हो गयो ?

मोतीलाल—ऊकी यह बात करो हो । ऊकी मा तो

मोजोराम—हा । या बात जरूर है । गरब करे जेको
तिकं वो जरूर चोड़े आजावे है । जने या, लीछमौजी
आप ई छोड़कर चली जावे है । कछा बी करे है—

“अभिमानिसे माया बोलो, मैं तेरासे चाली ।

खाट गूदडा सिरपर धरले, हिली करदे खाली ॥”

पण इसी करो जिको ऊंकी नांग धजासो ऊड़ती फिरै ।

गोपीराम—आपातो कोइको वो बुराई नई चावा हा ।
पण जका किरतब इसाई है जणा के होय । ओर
आपण बुरो कयोडो बी के होय है । आछी न्याऊ करणियु
तो परमात्मा है । वा कछाकरे है—

“कोन किसीको मारता, कोन करे बेहाल ।

सब बातोंका करणिया, टीनानाथ दयाल ॥”

मोजोराम—सेठजी । यो कलजुग है जिको कारजुग है,
“एक हाथ करो एक हाथ भोगो ।” ततकाल परचो मिलै
है । हलवा ओर ठाडा कयोडाको फल तो भोगणुई
पडे है ।

गोपीराम—अच्छा इव तो आपणे बी चालो गगाजीका
ओर पचमुखी हनुमानजीका दरशण कखावा ।

मोजोराम—चालो छठीनेई बाबा भूतनाथका दरशण
बी कखावागा ।

गोपीराम—ठोक है । (दोनू जावे है)

कि, इस को रुई में भोत घाटो है। जणाई सगला जणा नट गया ।

मोतीलाल—मानम होगी के बाकी रवे थी। या तो डकै की चोट बात हो रही है।

धमडीलाल—(मास लेकर) ईश्वर तेरी माया। इस तो तुझ रिछा करणैवालो है। इस या आवरू राखणी और खोणीं तेरेई हाथ है। आगेने तो मैं भोत समज २ कर चालूंगो। फाटको कदे बी नई करूंगो। सबने एक समान एक नजर से देखुंगो। गरोब को सदा ऊपकार करूंगो। कदे बी कीई को तिरस्कार नई करूंगो।

मोतीलाल—अैया साम माथा तो काम चाले कोनी। काम तो चालसो रुपया सैं। सो, रुपया की ऊपाय करो। नई तो या मोतीकी सो आव ऊतरता बार कोनी नागिगी। पीछे गई बातने छोडाई कोनी नावडेंगा। हाथ मसलताई रह ज्याबोगा। बेरो है क ना ?

धमडीलाल—मोतीलालजी ! या मोतीकी सो आव राखणो इस थारई हाथ है। मैं तो सेंग वेंग हो रिछो हू। मैं बखत मरेतो कइ बात कोनी ऊपजे। घेई म्याणा हो
१५ — कोई ऊपाय सोचो।

ऊनई जायो है । ऊ को आप्यामें सील कितणी है । कितणा
२ परोपकार का काम करे है । रात दिन दूसराकी भलाई
में लाग्यो रवे है ।

घमंडीलाल—या भलाई कवो । असल बात या है कि,
आपणे नोभाको फाटका कवाडा करने को काम नई है ।
वा कछा करे है—“किसबी किसव करे तो छाजे, नई मुड
घेसलो बाजे ।” अ मैं अहमानो सुलतानी होता बार कोनो
नारी । ये तो घर ज्याणो मर ज्याणी खा खिल है ।

मोतीलाल—फाटका कवाडा की तो येई बात है । वा
कछा करे है—“अणो चुकौ धार मारो ।” जरासो ध्यान
ऊक चुक होणेंई से अमें खराबी पेदा हो ज्याय है । पण
खैर । अ बखत सिरपर आफत मंड रही है जैकी पैला
उपाय होणी चाये ।

घमंडीलाल—ऊपाय बी होईसो ।

मोतीलाल—पीछे के ऊपाय होसो । वा कछा करे
है—“घोडी चाये निकासोर्न, बावडतो सो आये ।” “फांसी
चढ ज्यायो, अपोनमें कुटा ल्यु गा ।” ये बी वोई सांग करो हो ।

घमंडीलाल—एक काम करा । दो चार जगासे रुपया
पैचा (चुदारा) मगा ल्यो ।

मोतीलाल—पैचा ल्यावणने तो आदमी सगले भेज दियो
सो सब जगासे फिरती जबाब आगयो ।

घमंडीलाल—असो के, सगलाने मानस होगई दीखे है,

कान कटाया करे है" सो मोको इसोई है वे लोग जितणा
पैड भरावेगा जितणा पैड भर देवागा ।

मोतीलाल—ठोकरई है । वा कछा करे है—

"अरे इ गावमें रंगुं ऊट बिलाई लोगई छाजी २ केणु ।"
चानो अबखत वै घरपरई मिलेगा । सो भगवान चाये
तो आपणु काम शिद्व होज्यायगो ।

घमडीलाल—चालो, मैं त्यार हू ।

(दोनु जावे है)

● प्रवेश सातवों ●

ठिकानो गोपीराम सुरलीधरकी बैठक ।

(गोपीराम मोजीराम बैठग है)

गोपीराम—बोली, मोजीरामजी न्दाराज । आज कैया
कणमणा हो रिछा हो ?

मोजीराम—के बतावार् । आज तो वा हुई—

"भूलगई रागरग, भूलगई जकडी ।

तोन चोज याद रहो, तिन सुण लकडी ।"

कर ल्यो । वो दयावान आदमी है । रगलाल, भोलाराम वी ऊँका कच्चा में है सो वो ऊँणाने वो समजा लीवेगो । शोर-
- आपणु सगलो रस्तो आपई ठीक कर देवेगो । आपा बाणिया
हा । कदे सुँछ नीचेने, कदे ऊपर ने आँयाई होती
रवेँ है ।

घमडोलाल—या बात होणेसेँ गाव तो आपाने आगलिया
सेँ बतावण लाग ज्यावेगो ।

मोतीलाल—अब्बलमें तो गावने बेरी कोनी पटै । अगर
पटे वी तो के आट है । आपणु काम पार ऊतरण, चाये,
कोई ना कोई सुरत स बे लोग राजी होणा चाये । पीछे तो
कच्चा करें है—“दोयको दिल राजी, तो के करेगो बाजी ।”
आपाने समार की चिरचा स के मतलब है ।

घमडोलाल—आपणु चालण सेँ मानेगा या नई
मानेगा आँ बातकी के निसचे ?

मोतीलाल—निसचे क्याकी है । या तो ऊँकी खुशी
की बात है । चल्या चानो देखी जासी पीछे तो या बात है—
“हाकोम करे सो न्याव ओर पासो पडे सो डाव ।” जो कुछ
होणे सो होज्यायगो ।

घमडोलाल—खेर । थारे जचगई तो चल्या चालो ।
कच्चा करें है—“पढो बिटा फारसी, तले पडसी सो हारसी ।”
आपां आँ बसत सगलो वाता ऊँके नीचे दब रिछा हा
सो आगला की कुशामद कर लेवागा, क्युं कि “दवी चुनी

है सो अन्तमें वो सीदा पगा हो ज्यावेगो तो फेर बी बच
ज्यावेगो ।

रगलाल—याई बात तो मज्जेदार होगई । इब नकेल
आपणा हाथमें आगई । मनमें आवेगो जठोने घुमावागा ।

मोजीराम—घुमाणु फिराणु के है । बैरीसें तो बदलो
लीणु ई ठीक है । इसो मारो चारु हाथ पग ऊपरने करकर
चीत्त जापडै । एकडो सगली चोडै आग्याय । काच
बातोसो आपडै ।

भोलाराम—फिकर मनाकरो ! इसीई खो, इब ततका
दाव आ भिद्या है ।

मोजीराम—फिकर क्याको है । फिकर तो घणा खाया
को है । म्हेतो आजकाल कुल तीनसो तोलामें आ रिह्या हा ।

भोलाराम—बाबाजी । पूणी चार सेर तो खावो हो
ओर के पीछे हाथी घोडा खाय या ?

मोजीराम—म्हाने बेरो कीनीं आदमी बी हाथी घोडा
खाया करें हैं । या यात तो थारौई जबानी मालुम हुई ।
कोइ जगा काम पडगयो दीखै है ? जणार्इ या मोटी २
देई — खायोडोसो होरही है ।

—बाबाज, के ऊट पटाग बात करण लाग गया ।

। राधेश्याम ॥ कहो ।

गोपीराम—या कैया । थारे मस्त चादमियाकै फिकर को के काम ?

मोजीराम—(चिट्ठी दिखाकर) या देखो । देशकी चिट्ठी आइ है जिको लिख्यो है—छोरी वडो सारो हीगई सो फेरा जरूर करणा पडैगा । रुपयाको बन्दोबस्त कर लीयो । ब्यामैं रुपया एक हजार चायेंगा ।

गोपीराम—जणा के आट है (एक हजारका लोट निकालकर) ये ह्यो । छोरीका फेरा करदियो और चाये तो ओर लेलियो ।

मोजीराम—(रुपया लेकर) बस ! आनन्द होगया । ओर चायेंगा तो ये मालिक वैठ्याई ह्यो । मन्ने के फिकर है ।
(इतणामैं रगलाल भोलाराम आवें है)

रगलाल—देख लियो ना । घमडीलालको रो घमड नोसर गयो है । इसो जयलवार माग्यो है जिको पूत ऊठायोडोई ऊठसी ।

भोलाराम—बोतो ऊठ लियो । ऊंका बडका सात ओतार धारण करकर आग्याय तो ऊठणु ई नई ।

मोजीराम—(मुलककर) भरम २ में चोखो काम बणायो । थारे लीगा बिना ये काम कुण करतो । साची कही है—

“खेल खिलाराका, घोडा असवाराका ।

दुकानदारी भरमकी, हाकमी गरमकी ॥”

गोपीराम—एक बात है—काम आपणैं हाथमें आगयो

है सो भन्तमें, यो सीदा पगा हो ज्यावेगो तो फिर वी वच ज्यावेगो ।

रगलाल—याई बात तो मज्जेदार होगई । इस नकेल आपणा हाथमें आगई । मनमें आवेगो जठोने घुमावागा ।

मोजीराम—घुमाणुं फिराणु के है । बेरीसे तो बदलो नीणु ई ठीक है । इसी मारी चारुं हाथ पग ऊपरने करकर चीत जापडे । ऐकडो सगली चोडे आन्याय । काच बातोसी आपडे ।

भोलाराम—फिकर मनाकरो । पूसीई म्यो, इस ततका दाव आ भिद्या है ।

मोजीराम—फिकर क्वाको है । फिकर तो घणा खाया को है । म्हेतो आजकाल कुल तीनसो तोलामें आ रिद्धा हा ।

भोलाराम—बाबाजी । पूथी चार सेर तो खावो हो ओर के पीछे हाथी घोडा खाय था ?

मोजीराम—म्हाने बेरो कीनी आदमी बी हाथी घोडा खाया करें है । या बात तो थारोई जबानी मालुम हुई । कोई जगा काम पडगयो दीखै है ? जणाई या मोटी २ देई मूसा खायोडोसो हीरही है ।

रगलाल—बाबाज, के ऊट पटाग बात करण लाग गया । राधेश्याम । राधेश्याम ॥ कहो ।

मोजीराम—क्यु ऊ चोरटाने बापको क्यु दीणू आवे है के ? सीताराम । सीताराम ॥ बोलो ।

गोपौराम—वाह ! या खुब हुई । वा कछाकरें है—
 “कोई गावे होलीका, कोई गावे दिवालीका” ये राधेश्याम
 राधेश्याम कवे हैं, ये सौताराम सौताराम बोलो हो ।

(इतनामें मुरली आवे है)

मुरली—(नाड़ हलाकर) बाबा, राधाकिशना बोल तेरा
 क्या लगेगा मोल ।

रगलान—(भोजौरामने) बोलो । म्हे के करा । टाबरार्द
 थारो खिज काड राखें है । जैंको के ऊपाय ?

भोजौराम—ये के करें ! अण में तो बा हुई “एक पेठो
 नो लगवाल, गधोने ले गयो कोटवाल ।” सगलार्द जणा
 अणने खिजावे हैं ।

गोपौराम—(भोजौरामने) थाने कोई खिजावे जणा ये
 चुप हो ज्याया करो । क्युई मत बोल्या करो ।

भोजौराम—म्हे किसा चोर हा जिको चुप हो ज्यावा ।
 चुप चाप तो चोरई रिह्या करें है । वैई कोनो बोल्या
 पावें । कही बो तो है—

“भाली चाहे बरसणां, धोबी चाहे धुप ।

साह जो चाहे बोलणा, चोर जो चाहे चुप ॥”

म्हे तो साह हा, चोर की नाम तो लेवाई कोनो, बोल्या
 बिना कैया रवा ।

(इतनामें घमंडीलाल भोतीलाल आवें हैं)

घमंडीलाल—(भोतीलालने) भोको तो चोखो मिल

गयो । अँ बखत मगला जणा मौजुद है । चोकड़ी की चोकड़ो भेलो हो रही है ।

मोतीलाल—बस, भगवान चाये तो इब कांम बण ज्यामो । ये तो अँ बखत जितणी नीचो खीचणं सकी खीच जयायो क्यु की मोफो ईसोई है ।

मोजोराम—(मनमें) आज तो सुनीम मार्लिक दोनु' आवे है । पूताके पोखाना होगया, काच भारो दीण लाग गई, गड़वा से भेर होगइ (ऊपरसे) "देखो सरदाकी हय फेरो, या मा तेरो क भेरो ।"

घमडीलाल—(गोपीराम का पगमें पगड़ी धरकर) या लाज राखणी थारै छाय है ।

गोपीराम—है । है । । घमडीलालजी यो के । ये बडेरा हो (पगड़ो ऊठाकर घमडीलालने दे देवे है)

घमडीलाल—अँ बखत दुनियामें थारै सिवाय कोई नई है (रगलालने) मेरे से जो कुछ कसूर हुयो होय माफ करो । मैं काय्या को फल चोखी तरा पागयो ।

मोजोराम—क्यु । बाकी होती और कर कर देखल्यो । अ एका पगमें पगड़ो के धरो हो, मेरा पगमें धरो ज्यु' पर लोक में मोच होज्याय ।

भोलाराम—बाबाजी ! पेला अँ लोककी तो मोच हु गयो । परलोक की बात पोछे करियो ।

घमडोलाल—(हाथ जोडकर) मैं तो धारो सब को दास
हु । कोई सुरत से मेरी कदर करो ।

गोपीराम—(रंगनालने) बोलो । इब के करणों चाये ।

रंगनाल—देख ल्यो । आप मालिक हो । जचे जैया
करो । म्हे तो ये करोगा जैया त्यार हा ।

मोतौलाल—(सवने) आपलोग दासु हो, बडा आदमी
हो । दया करकर यो वेडो पार लघावो ।

गोपीराम—(घमडोलालने) अच्छा तो म्हे लोग इब रुई
पर कोई रकम को जोर कोनी देवागा । थाने जितणु माल
डिलेवर दीणु होय आपणो गुदाम पर आडर काट दियो सो
सग ना जया आपेई ठीला हो ज्यावेगा । सगलो सोदो सेटल
होता बारई कानी लागीगा ।

घमडोलाल—या तो ठीक । पण आजका भावामें वो
सगलो सोदो सेटल हो ज्यावेगो तो सो क्यु देय लेय कर,
रुपया दश लाख डिफरन्सका दीणने चायेगा । पौछे दश
पाच लाख और होणसे आगेने को काम चलु होगो ।

गोपीराम—खेर कोई बात ना । आगेने प्रतिज्ञा करो
मैं गरब गुमान नहो करुगो, गरौबा पर दया राखुंगो ।
किसी को अपमान नही करुगो ।

(घमडोलाल प्रतिज्ञा कर लेवे है । गोपीराम बीस लाख
को चीक काटकर दे देवे है)

घमडोलाल—(चीक लेकर) भगवान धारो भली करो ।

मयै हुबताने ऊधार लियो मै जलम भर थारो गुण नई भूलुंगो ।

गोपीराम—देखो, यो बेर त्रिरोद्ध सोवधाने खराब करे है । आदमौने सब सें मिलकर रेणु । यो नदी नाव सजोग हो गयो है सो मिल जुमकरई रेणुमें भलाई है । कष्टो वो है—

“तुलसी या ससार में, भाति भानि के लोग ।

सबमें रल मिल चालिये, नदी नाव सजोग ॥”

घमडीलाल—मेरी तो आगिने कोई रकम की सिक्कायत सुणो तो एक कानी की मेरी मूछ काट लियो ।

रगलाल—बम तो । सुख पावोगा ।

भोलाराम—इव तो चार फारम आपणा एक होगया ।

सगला काम मिल जुनकर होता रहे गा ।

मोतीलाल—चारवाका नाम तो म्हाने बी बतावो ? ज्यु आगिने नीगै तो वर्णो रवे ।

मोजीराम—व्यो म्हे बतावां । सुणो—

(१) बाबु गोपीरामजी मुरलीधर ।

(२) बाबु रगलालजी रामगोपाल ।

(३) बाबु भोलारामजी भींवराज ।

(४) बाबु घमडीलालजी गिरधारीलाल ।

मोतीलाल—भोत ठीक ।

मोजीराम—जो हुकम (त्वारी करे है)

(इतनामें हरीप्रसाद आवे है)

गोपीराम—हरीप्रसाद एक काम कर । मैं आज देश जाणेको मन सुबो कर लियो है, सो हवडे जाकर आपणु सगलो असबाब बिरखमें लगायाव और एक सिकन को डब्बो नारनोल को रिजाब करायाव ।

हरीप्रसाद—वसी के । चाण चुकीई के ध्यान में आगई ? आच्छो मैं असबाब लेकर जाऊं हु । अने बिरखमें लगा कर, गाड़ी रिजब कराकर इसी आज हु । दो जमादाराने साथ ले ज्याऊं हुं जिको माल लगाता रहेगा मैं, भटपट गाड़ी रिजाब कराकर पीछो आन्याऊ गो ।

गोपीराम—ठीक है ।

(हरीप्रसाद, जमादाराने तथा असबाब लेकर दृष्टेग्रनपर जावें है)

निकमी—(गोपीगमने) चालो मैं बखत दो एक काम बी आपांनि करणां है, जिका बो हो ज्यायगा । पीछे मजेसे बठेई खागा । अठे तो रामारी मादगी सेंई पीछो कोनी छुटे ।

गोपीराम—या बात ठीक है । आपणी नई हेलीको नागल बी हो ज्यायगो । और जसरापुर का सकट मोचन श्रीहनुमानजो के एकबर चालण है जिको मेलो पोह सुदी १५ को नजोक आगयो सो ऊठे बी चाल्यावागा । क्यु नि पेल्ला पोत कलकत्ते जिके टिन आया जणा मनमें या प्रतिष्ठा

करौ थी कि आपण भाग परताप चोखो हो ज्यावेगो तो म्हाराज के मेले में जरूर सामिल होवागा सो वा प्रतिज्ञा दी पूरी हो ज्यावेगो ।

सुरली—काकोजी । जसरापुर की मेले किसीक होय है । मनै बी बतावो ?

गोपीराम—बेटा । भोत चोखो होय है । भोत र रकम का तमाशा हुया करे है । कई किसम की दुकानां लग्या करे है । भोतसा आदमी मेला हुया करे है । बालाजोको मूर्ती भोत सोवणो, नडो सारा है, जैका दरशण से भोत आनन्द आया करे है ।

मोजौराम—धोर देखी है क ना ? मन्दर में एक कानो बाबा भोलासिभूकी मूर्ति किसीक सागो पाग है, जाण्युं साच्याई मु से बोल पडैगो ।

सुरली—जणा तो इव के मेलामें जसरापुर में बी चालु गो ।

गोपीराम—तने तो जरूरई ले चालागा । कछा करे है—“गुड बिना किसी चीथ ।”

(इतराणामें हरीप्रसाद आवें है)

हरीप्रसाद—इस्टेशन की काम तो सगली त्यार है । इव थारी बोलो के सैक्षा है ?

गोपीराम—म्हे बी त्यार हा ।

मोजौराम—म्हारो सीतारामजी बी त्यार है ।

गोपीराम—इव सगला जणा जीम जुठ कर त्यार हो

मारवाड़ी बोली में अपूर्व पुस्तक ।

बालविवाह-नाटक ।



मारवाड़ी समाजमें बालविवाहको बड़ी कुचाल है । कितनेही महा पुरुष अपनी बड़ी लड़की का विवाह धनवानके छोटे लड़के के साथ कर देते हैं । बर पिता भी धनवान की लड़की समझ कर कुपरिणामको न देखता हुआ इस अन्ध रूपमें गिर पड़ता है । इस अनमेल विवाहका बौसा बुरा गुतीजा होता है सो इस पुस्तकमें भलि प्रकारसे दिखाया गया है । हम इसकी ज्यादा तारीफ न करके सिर्फ इतनाही कह देते हैं कि यह पुस्तक मारवाड़ी भाषाके विख्यात सुलेखक बाबू भगवतोप्रसादजी दारूकाकी खाश लेखनीसे निकली है । पुस्तक शिचापद होनेके सिवाय दिवंगीका भी भण्डार है ।

मुख्य ॥ डा० ११

पुस्तक मिलनेका पता —रामलाल नेमाणी,

अध्यक्ष—रामप्रेस कार्यालय,

५६, काटन स्ट्रीट, (अफीम चौरस्ता) कलकत्ता ।

